A Daily News Magazine
भोपाल
रविवार, 19 अक्टूबर, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 51, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

यात्रा...

फोटो: पंकज शर्मा

सुप्रभात

देवोठनी एकादशी के भोर में
माँ, टोले-गाँव की अजिया काकी
पीटतीं सूप ईख की अगौरी से
कहतीं इससे भाग जाता दलिद्दर
होता प्रवेश लक्ष्मी का, सौभाग्य का
क्षीर सागर में उठ जाते चक्रधारी
सिंधुसुता से चरण सेवा कराते
और भू पालक गौतम ऋषि की
तपस्या की निश्चितता सराहते
खेत खलिहान सूख गये और
आकंठ कर्ज में डूबे दइलू सुखई
जिंदा मरे फिर फंदों में झूल गये
इन पर बिसातें बिछीं वजीर सजे
दोपायों से ज्यादा चौपायों के नाम पर
खेली गईं होलियाँ
कोई हारी बाजी मार गया
कोई जीती बाजी छोड़ गया
जम्हूरियत तार-तार हुई
कहीं गोली चलीं कहीं तोपें दगीं
राजी-खुशी खैरियत की नुमाइश में
कालकूट पीते आतप सहते शिव-शिवा
अहर्निश अच्छे दिनों की आस में
बलइया ली गईं भाइयों की और खबरें बढ़ीं
बहनों-बेटियों पर अत्याचार अनाचार की
अट्टहास तेज हुआ रावणों की भीड़ का
पूंजी गईं मूर्तियाँ देवियों को लांक्षित कर
कोटिमान दीयों से अंधकार बढ़ गया
शब्दों के अर्थ को अर्थ ने खरीद लिया
आ रही हैं चंचला चंचलों के महल में
पीटती हैं सूप काकी अब भी इस आस में
कि आयेगा धन और जायेगा दलिद्दर
उनके घर, टोले, गाँव और देश से।

– डॉ. श्यामबाबू शर्मा

संविधान की किताब लेकर नाचने वाले
नक्सलियों के रक्षक

मोदी बोले-कांग्रेस माओवादी आतंक छिपाती है

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ग्लोबल समिट को संबोधित किया। उन्होंने कहा- कांग्रेस माओवादी आतंक को छिपाती है। इनके शासन में देश का करीब हर बड़ा राज्य नक्सली हिंसा और माओवादी आतंक की चपेट में था। आगे उन्होंने कांग्रेस नेता राहुल गांधी का नाम लिए बिना कहा- मैं बहुत जिम्मेदारी से बोलता हूं, जो माथे पर संविधान लेकर नाचते हैं। वो आज भी माओवादियों की रक्षा में दिन रात लगे हैं। पीएम मोदी ने कहा कि भारत अब आतंकी हमलों के बाद चुप नहीं रहता। अब भारत सर्जिकल-एयर स्ट्राइक और ऑपरेशन सिंदूर करके दुश्मन को जवाब देता है। भारत रुकने के मूड में नहीं है। हम न रुकेंगे, न थमेंगे, 140 करोड़ देशवासी मिलकर तेजी से आगे बढ़ेंगे। भारत में एक समय बदलाव हुआ था। एक इकोसिस्टम इसके गुण गाते रहता है। आज रिफॉर्म कंविक्शन के कारण हो रहे है। आईएमएफ कहता है भारत के रिफॉर्म के बोल्डनेस को देख रहे है। आज दुनिया का 50 फीसदी रियल टाइम डिजिटल ट्रांजेक्शन भारत में ही होता है।

जहां ज्यादा लोकतांत्रिकरण होगा, वहां उतनी स्पीड आएगी

देश के लोगों से देश को असली ताकत मिलती है। इसका उपयोग तभी सही हो पाता है, जब सरकार का उनके जीवन में न दखल हो न दबाव हो। जहां ज्यादा लोकतांत्रिकरण होगा, वहां उतनी स्पीड आएगी लेकिन दुर्भाग्य से देश में 60 साल सरकार चलाने वाली कांग्रेस ने पॉलिसी के सरकारी करण पर जोर दिया। बीते 11 साल में हमने पॉलिसी के लोकतांत्रिकरण का काम किया है। बैंकिंग में 60 के दशक में इंदिरा गांधी ने बैंक का सरकारीकरण किया। उन्होंने कहा कि देश के आम लोगों तक बैंकिंग सुविधा पहुंचानी है लेकिन कांग्रेस ने बैंक को देश की जनता से दूर कर दिया। गरीब बैंक के गेट तक जाने में डरता था। 2014 में हमारी सरकार बनी तब देश की 50 फीसदी जनता के पास खुद का बैंक खाता नहीं था। 2014 से पहले सरकारीकरण की सोच हावी थी। सरकारी खजाने से सब्सिडी न देने पड़े इसलिए कांग्रेस सरकार रात 8 से सुबह 8 बजे तक पेट्रोल पंप बंद करने पर विचार कर ही थी। आज 24 घंटे बेरोकटोक पंप खुले रहते हैं। कांग्रेस के समय में गैस का एक कनेक्शन पाने के लिए एमपी से लिखवाना पड़ता था।

अब किसान केवल 10 प्रतिशत देकर पाएंगे सोलर पंप,सरकार देगी 90 प्रतिशत सब्सिडी
किसान हमारी अर्थव्यवस्था की हैं रीढ़ : मुख्यमंत्री

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि हमारे किसान भाई ही मध्यप्रदेश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ हैं। किसानों का हित हमारे लिए सर्वोपरि है। सरकार का हर निर्णय किसानों के कल्याण को ध्यान में रखकर लिया जा रहा है। किसानों की भलाई के लिए हमारी सरकार हर जरूरी कदम उठायेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार हर संभव तरीके से किसानों की आय बढ़ाकर उनकी माली हालत मजबूत करने के लिए प्रयासरत है। भावांतर योजना किसानों को खुले बाजार में फसलों की कीमतों के उतार-चढ़ाव से सुरक्षा देती है। यह योजना किसान हित में सरकार की एक बड़ी पहल है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को मुख्यमंत्री निवास परिसर में सोयाबीन पर भावांतर भुगतान के उपलक्ष्य में आयोजित किसान आभार सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सूखे खेत को अगर पानी दे दिया जाये, तो फसल सोना हो जाती है, हम प्रदेश के हर खेत तक पानी पहुंचायेंगे। मध्यप्रदेश के अन्नदाता अब ऊर्जादाता बन रहे हैं। किसान भाई अपने खेतों में सोलर पंप जरूर लगाएं। सोलर पंप लगाने से बिजली के अस्थाई कनेक्शन के खर्च से मुक्ति मिलेगी। मुख्यमंत्री ने किसानों के हित में एक बड़ी घोषणा करते हुए कहा कि सोलर पॉवर पंप स्थापना के लिये किसानों को अब 90 प्रतिशत सब्सिडी दी जाएगी। पहले 40 प्रतिशत सब्सिडी दी जाती थी। मुख्यमंत्री ने कहा कि किसानों को विद्युत पंप से एक स्टेप अधिक पॉवर केपिसिटी का सोलर पॉवर पंप दिया जायेगा अर्थात् 3 एचपी वाले किसान को 5 एचपी का सोलर पॉवर पंप और 5 एचपी वाले किसान को 7.5 एचपी का सोलर पॉवर पंप दिया जायेगा। मुख्यमंत्री ने किसान आभार सम्मेलन में पारम्परिक वेशभूषा में सांस्कृतिक प्रस्तुति देने वाले सभी कलाकारों को 5-5 हजार रूपए देने की घोषणा भी की। इससे पहले मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्ज्वलन तथा भगवान हलधर बलराम एवं भारत माता के चित्र पर माल्यार्पण कर सम्मेलन की विधिवत् शुरूआत की।

किसानों को दी गई भावांतर योजना की जानकारी

कृषि, सहकारिता और विपणन विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों ने सोयाबीन उत्पादक किसानों को भावांतर योजना की प्रक्रिया, पंजीयन और तय न्यूनतम समर्थन मूल्य (5328 रुपए प्रति क्विंटल) से फसल के बिक्री मूल्य के वास्तविक अंतर की राशि के लाभ वितरण की व्यवस्था के बारे में विस्तार से जानकारी दी। किसान सम्मेलन में बताया गया कि भावांतर योजना के अंतर्गत सोयाबीन उत्पादक किसान 24 अक्टूबर 2025 से 15 जनवरी 2026 तक अपनी उपज कृषि उपज मंडियों में विक्रय कर सकेंगे। फ़सल बेचने के बाद भावांतर की राशि मात्र 15 दिनों के भीतर सीधे किसानों के आधार से लिंक बैंक खाते में जमा कर दी जाएगी। कृषि विभाग के अधिकारियों ने बताया कि भावांतर योजना के लिए किसानों द्वारा ई-उपार्जन पोर्टल पर पंजीयन की प्रक्रिया 17 अक्टूबर तक पूरी की जा चुकी है।

अब पाकिस्तान की एक-एक इंच जमीन 'ब्रह्मोस' की पहुंच में है

- रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने लखनऊ से रवाना की मिसाइल की पहली खेप
- रक्षामंत्री ने कहा-ऑपरेशन सिंदूर के दौरान दुनिया ने देखी स्वदेशी ताकत

लखनऊ (एजेंसी)। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शनिवार को लखनऊ स्थित ब्रह्मोस एयरोस्पेस प्रोडक्शन यूनिट में ब्रह्मोस मिसाइलों की पहली खेप को हरी झंडी दिखाई। इस मौके पर उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश कभी गुंडा राज और बिगड़ती कानून-व्यवस्था के लिए जाना जाता था।

लोग डर के साये में जीते थे। निवेशक यहां आने से कतराते थे लेकिन आज का उत्तर प्रदेश हमारे मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में बदल गया है। जिस तरह से उन्होंने राज्य की कानून-व्यवस्था को संभाला है, वह अपने आप में अनुकरणीय है। मंच पर सीएम योगी आदित्यनाथ की उपस्थिति में राजनाथ सिंह ने कहा कि यह न केवल ब्रह्मोस और हमारे सशस्त्र बलों की शक्ति का प्रतीक है, बल्कि यह संदेश भी है कि उत्तर प्रदेश किसी भी चुनौती से निपटने के लिए तैयार है। मैं इस सुविधा (ब्रह्मोस लखनऊ इकाई) की स्थापना में योगी आदित्यनाथ के पूरे दिल से दिए गए सहयोग की प्रशंसा नहीं कर सकता। मुझे कभी किसी चीज की कमी की चिंता नहीं करनी पड़ी।

दलित दबेगा नहीं झुकेगा नहीं अब इंकलाब होगा

- कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष राजेश राम का आरजेडी पर बड़ा वार

पटना (एजेंसी)। बिहार विधानसभा चुनाव 2025 के पहले चरण का नामांकन समाप्त होने के बावजूद, महागठबंधन (राजद, कांग्रेस, वामदल, वीआईपी और वाम दल) के भीतर सीट-शेयरिंग पर सहमति नहीं बन पाई है, जिससे गठबंधन में दरार गहरी होती दिख रही है। वैशाली और लालगंज सहित कम से कम 9 सीटों पर महागठबंधन के घटक दलों के बीच ही मुकाबला देखने को मिल रहा है। इनमें से प्रदेश अध्यक्ष राजेश राम की विधानसभा सीट कुटुंबा (कुटुम्बा) पर सामने आई है। राजेश राम ने एक्स पर ट्वीट किया,दलित दबेगा नहीं-झुकेगा नहीं अब इंकलाब होगा।

पाक पर नया हमला नहीं करेगा अफगानिस्तान

क्रिकेटर्स की मौत के बाद तालिबान का बयान

काबुल (एजेंसी)। शुक्रवार रात पाकिस्तान के एयरस्ट्राइक के बाद भी तालिबान ने कतर की राजधानी दोहा में युद्धविराम को लेकर होने वाली बैठक में शामिल होने का फैसला किया है। तालिबान की तरफ से जारी बयान में कहा गया है कि पाकिस्तान का हमला करना निंदनीय है, लेकिन क्षेत्रीय शांति के लिए वो पाकिस्तान पर जवाबी कार्रवाई नहीं करेगा। तालिबान के आधिकारिक प्रवक्ता जबीहुल्लाह मुहाजिद ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर इसको लेकर बयान जारी किया है। आपको बता दें कि पाकिस्तान ने अफगानिस्तान के पक्तिका प्रांत में शुक्रवार रात को हमला किया था, जिसमें कम से कम तीन स्थानीय क्रिकेटर्स मारे गये हैं। पाकिस्तान के हमले में कई अफगान नागरिकों की भी मौत हो गई है। जिससे क्षेत्र में सुरक्षा और शांति की स्थिति और भी संवेदनशील हो गई है। अफगान तालिबान ने इस हमले की कड़ी निंदा की है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 35°c
न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ रविवार, 19 अक्टूबर 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

मुस्लिम समाज का अनोखा निकाह परिचय सम्मेलन

बिना दहेज शादी करने के लिए सामने आए लोग, 400 से ज्यादा ने कराया रजिस्ट्रेशन

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश मुस्लिम विकास परिषद, भोपाल द्वारा समाज में बढ़ती दहेज प्रथा के खिलाफ एक सराहनीय पहल की जा रही है। परिषद के प्रोग्राम कन्वेनर सैयद अशरफ अली (एडवोकेट) और कोऑर्डिनेटर शावेज सिकंदर ने बताया कि मुस्लिम समाज में दहेज की प्रवृत्ति ने सामाजिक संतुलन को प्रभावित किया है, जबकि इस्लाम में निकाह एक आसान और बरकत वाला अमल बताया गया है, जिसका दहेज जैसी गैर-इस्लामी रस्मों से कोई संबंध नहीं है।

22 सम्मेलन, अब तक 400 से ज्यादा का रजिस्ट्रेशन- इस उद्देश्य से परिषद द्वारा 22 अक्टूबर (बुधवार) को हमीद मंज़िल, भोपाल में सुबह 9 बजे से दोपहर 3 बजे तक निकाह परिचय सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। इस सम्मेलन को लेकर समाज में उत्साह देखा जा रहा है। अब तक 400 से अधिक युवक-युवतियों और उनके पेरेंट्स रजिस्ट्रेशन करवा चुके हैं। आयोजकों ने बताया कि जो बिना दहेज और गैर-इस्लामी रस्मों से परे, हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत के अनुसार निकाह करना चाहते हैं।

सादगीपूर्ण विवाह को प्रोत्साहन

परिषद के सदस्य सय्यद फैज अली ने बताया कि कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य इस्लामी सिद्धांतों पर आधारित सादगीपूर्ण विवाह को प्रोत्साहित करना है, ताकि घरों में सुकून और बरकत कायम रह सके। उन्होंने कहा इस्लाम में निकाह को एक पवित्र अमल माना गया है। इसमें सारी जिम्मेदारी लड़के वालों की होती है, लड़की वालों पर किसी तरह का बोझ नहीं डाला जाना चाहिए। लेकिन समाज में चल रही दहेज की परंपरा इस मूल भावना के विपरीत है।

सैयद फैज अली ने कहा मुस्लिम विकास परिषद का यह प्रयास समाज को यह संदेश देने के लिए है कि निकाह में सादगी और समानता अपनाई जाए, और लड़की पक्ष पर किसी भी आर्थिक या सामाजिक दबाव को खत्म किया जाए। परिषद का लक्ष्य है कि ऐसे सम्मेलन लगातार आयोजित कर युवाओं को दहेज-मुक्त निकाह की ओर प्रेरित किया जाए।

सेवा परमो धर्म संस्थान' ने चलाया अन्न स्नेह जनसेवा अभियान

100 से अधिक जरूरतमंदों को मिला सहयोग

भोपाल (नप्र)। जहां एक ओर लोग दिवाली की तैयारियों में व्यस्त थे, वहीं सेवा परमो धर्मः संस्थान ने इस पर्व को जरूरतमंद मरीजों की सेवा को समर्पित कर दिया। संस्थान ने शनिवार को जयप्रकाश चिकित्सालय, भोपाल में अन्न स्नेह योजना जनसेवा अभियान के तहत टीबी और अन्य गंभीर बीमारियों से जूझ रहे मरीजों के बीच खाद्य सामग्री वितरण कार्यक्रम आयोजित किया।

कार्यक्रम में 100 से अधिक आर्थिक रूप से कमजोर मरीजों को कच्ची खाद्य सामग्री और अतिरिक्त सहायता सामग्री दी गई। संस्था का उद्देश्य था कि इन मरीजों और उनके परिवारों के घरों में भी दिवाली की खुशी और उम्मीद का दीप जल सके।

इस अवसर पर डॉ. मनोज वर्मा, निदेशक एवं जयप्रकाश चिकित्सालय के कई अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे। उन्होंने संस्थान की इस मानवीय पहल की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम समाज में सेवा और संवेदना की भावना को मजबूत करते हैं। संस्थान के अध्यक्ष वीरेंद्र आर्य ने कहा कि यह केवल सामग्री वितरण नहीं, बल्कि उन परिवारों में अपनापन और आशा का दीप जलाने का प्रयास है, जो बीमारी और आर्थिक कठिनाइयों से जूझ रहे हैं। सेवा ही सच्चा धर्म है, और मानवता ही सबसे बड़ा उत्सव। कार्यक्रम का संचालन वीरेंद्र आर्य के नेतृत्व में हुआ, जिसमें रामू खटीक (कोषाध्यक्ष), आदर्श इनवेटे, सत्यम गौर, प्रमोद कुमार, शुभम विश्वकर्मा, शुभम खटीक, कुलदीप यादव, समीर दुबे और अन्य सदस्य सक्रिय रूप से जुड़े रहे।

आलीशान जिंदगी जीने वाले डीआईजी का हाल बेहाल!

- जमीन पर गद्दा लगाकर गुजारी रात, इधर सीबीआई ऐक्टिव

नई दिल्ली (एजेंसी)। रिश्वत लेते फंसे पंजाब पुलिस के डीआईजी हरचरण सिंह भुल्लर की पहली रात चंडीगढ़ की बुड़ैल जेल में मुश्किल से कटी। जेल में उन्हें बूढ़ा बैरक में रखा गया है। यह वह बैरक है जहां 50 साल की उम्र वाले और अच्छे आचरण वाले बंदी व कैदियों को ही रखा जाता है। भुल्लर की पहली रात बेचैनी में ही बीती। उन्हें सोने के लिए जमीन पर गद्दा लगाकर दिया गया और एक तकिया मिला। इसी बैरक में हिमाचल प्रदेश के आईजी रहे जाहूर जैदी और कोर्ट में अपने दामाद की गोलियां मारकर हत्या करने वाले पंजाब के पूर्व एआईजी मालविंदर सिंह सिद्धू भी बंद हैं। डीआईजी भुल्लर के साथ पकड़े गए उनके बिचोलिए कृष्णु को अलग बैरक में रखा गया है। डीआईजी हरचरण सिंह भुल्लर ने काली कमाई को सोफे और क्रॉकरी की अलमारी में छिपा रखा था। भुल्लर की चंडीगढ़ के सेक्टर-40 वाली कोठी से सीबीआई को 7.5 करोड़ कैश मिला। सामान की 2 आलमारियों में सोना छिपाकर रखा था। महंगी शराब का जखीरा लुधियाना के समराला में स्थित फार्म हाउस से मिला है। यहां से शराब की 108 बोतलें बरामद हुई हैं। चंडीगढ़ सीबीआई कोर्ट में पेश होने के दौरान डीआईजी ने कहा था कि सभी आरोप झूठे हैं, जिन्हें वह अदालत में साबित करेंगे। कोर्ट इंसाफ करेगा।

बाजार का रिजल्ट देखकर गदगद नजर आ रही है सरकार

- जीसएटी 2.0 के रिजल्ट से मोदी सरकार की बल्ले-बल्ले

अश्विनी वैष्णव बोले-इस साल 20 लाख करोड़ की अतिरिक्त इलेक्ट्रॉनिक खपत की उम्मीद

नई दिल्ली (एजेंसी)। जीएसटी सुधार के बाद के आंकड़ों को देख सरकार गदगद नजर आ रही है। इस बारे में शनिवार को केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं आईटी मंत्री अश्विनी वैष्णव ने एक संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इन्होंने इस साल के त्योहारी सीजन के दौरान आर्थिक गति को बढ़ाने में जीएसटी की दरों में बदलाव को एक बड़ी वजह बताया। इन मंत्रियों ने कहा कि 22 सितंबर से लागू हुए जीएसटी सुधारों से ग्राहकों की मांग बढ़ी है। साथ ही कई चीजों की कीमतें कम हुई हैं और ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स और एफएमसीजी (तेजी से बिकने वाले उपभोक्ता सामान) जैसे प्रमुख क्षेत्रों में स्पष्ट रूप से तेजी आई है। इस दौरान वित्त मंत्री ने कहा,जीएसटी सुधार नवरात्रि के पहले दिन लॉन्च हुए थे, मुझे

लगता है कि भारत के लोगों ने इसे अच्छी तरह से स्वीकार किया है। उन्होंने आगे कहा कि सरकार ने 54 आवश्यक वस्तुओं की बारीकी से निगरानी की है और पाया है कि लाभ लोगों को मिला है।

लंबे समय से चल रहे थे सुधार, रिकॉर्ड बिक्री

केंद्रीय वाणिज्य और उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि ये सुधार लंबे समय से चल रहे थे। उन्होंने कहा, वित्त मंत्री द्वारा 3 सितंबर को जीएसटी सुधार की घोषणा लगभग सवा साल से प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में चल रही थी। मैं प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री को इस साल की नवरात्रि को इतना खास बनाने के लिए धन्यवाद देता हूं। 22 सितंबर को जीएसटी का नया रूप लागू किया गया। बाजारों में, उद्योग और व्यापार जगत में, और आम जनता में, सभी ने उत्साह और ऊर्जा की एक नई भावना का अनुभव किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि बुनियादी ढांचे में निवेश और सामर्थ्य के दोहरे प्रयास से कई गुना लाभ मिल रहा है। यही कारण है कि भारत विश्व स्तर पर सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक बना हुआ है। आईएमएफ ने हमारे जीडीपी वृद्धि पूर्वानुमान को 6.6 प्रतिशत तक संशोधित किया है।

वाघा बॉर्डर पर रिट्रीट का समय भी बदल दिया गया

ना खुलेंगे भारत और पाक के गेट, ना मिलेंगे हाथ

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत-पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय सीमा अटारी बॉर्डर पर होने वाला रिट्रीट सेरेमनी का समय बदल दिया गया है। अब सर्दियों के चलते यह आधा घंटा पहले शुरू होगा। बीएसएफ के प्रोटोकॉल अधिकारी अरुण महल ने बताया कि अब यह समारोह शाम 5 बजे से 5.30 बजे तक आयोजित किया जाएगा। पहले इसका समय शाम 5.30 बजे से 6 बजे तक था। नया समय तुरंत प्रभाव से लागू कर दिया गया है। सुरक्षा कारणों के चलते अब भारत-पाक सीमा गेट बंद रहेंगे और इस दौरान दोनों देशों के सुरक्षा बलों के बीच कोई पारंपरिक अभिवादन या रस्में नहीं होंगी। पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान पर छह व सात मई को ऑपरेशन सिंदूर के अंतर्गत आतंकी ठिकानों को तबाह किया। इसके बाद 7 मई से रिट्रीट सेरेमनी पर सात मई को विराम लगा दिया था। भारत-पाकिस्तान के बीच 10 दिन के युद्धविराम के बाद सीमा सुरक्षा बल ने 20 मई को पंजाब के अटारी-वाघा, हुसैनीवाला और फाजिल्का सीमाओं पर छोटे स्तर पर बीटिंग रिट्रीट समारोह फिर से शुरू किया था। अटारी, हुसैनीवाला और सादकी बॉर्डर पर रोजाना समारोह जारी है, चाहे पाकिस्तानी पक्ष शामिल हो या नहीं। बीटिंग रिट्रीट अमृतसर के पास दोनों देशों की सीमा पर साल 1959 से हो रही है, जिसमें राष्ट्रीय झंडे उतारने की प्रक्रिया शामिल होती है।

लेह हिंसा की न्यायिक जांच कराएगा गृह मंत्रालय

रिटायर्ड जस्टिस बीएस चौहान को सौंपी जिम्मेदारी

लेह (एजेंसी)। गृह मंत्रालय ने शुक्रवार को लेह में 24 सितंबर के हुई हिंसा की न्यायिक जांच के आदेश दिए हैं। रिटायर्ड सुप्रीम कोर्ट जज जस्टिस बीएस चौहान को निष्पक्ष जांच की जिम्मेदारी सौंपी गई है। जांच समिति पुलिस कार्रवाई और चार लोगों की मौत के कारणों का पता लगाएगी। दरअसल, 24 सितंबर को लेह एपेक्स बॉडी और कारगिल डेमोक्रेटिक अलायंस ने राज्य का दर्जा और छठी अनुसूची की मांग को लेकर प्रदर्शन किया था। इस दौरान सुरक्षाबलों और प्रदर्शनकारियों के बीच भिड़ंत हुई, जिसमें चार लोग मारे गए और 90 घायल हुए। दो दिन बाद 26 सितंबर को पर्यावरण कार्यकर्ता सोनम वांगचुक को राष्ट्रीय सुरक्षा अधिनियम के तहत गिरफ्तार कर लिया गया था और जोधपुर जेल भेज दिया गया था।

- 24 सितंबर को हिंसा में चार लोगों की जान गई थी

वांगचुक की रिहाई के लिए उनकी पत्नी गीतांजलि अंगमो ने 2 अक्टूबर को सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। जस्टिस चौहान के साथ इस जांच समिति में मोहन सिंह परिहार (रिटायर्ड डिस्ट्रिक्ट जज) और तुषार आनंद शामिल हैं। लद्दाख के मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक को जांच में पूरी तरह सहयोग देने का निर्देश दिया गया है। सरकार ने कहा कि वह हमेशा बातचीत के लिए तैयार है और लेह एपेक्स बॉडी तथा कारगिल डेमोक्रेटिक अलायंस के साथ उच्च स्तरीय समिति के जरिए चर्चा जारी रखेगी।

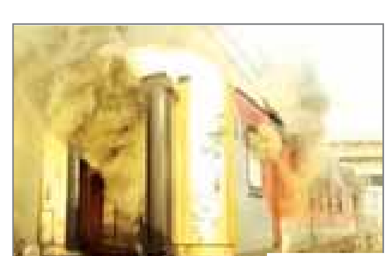

लुधियाना से दिल्ली जा रही ट्रेन में लगी भीषण आग

जान बचाने के लिए कूदकर भागे यात्री, बड़ी दुर्घटना टली

चंडीगढ़ (एजेंसी)। लुधियाना से दिल्ली जा रही गरीबरथ ट्रेन की एक बोगी में अचानक आग लग गई। हादसा बोगी नंबर 19 में हुआ, जिसमें कई यात्री सवार थे। आग लगने से यात्रियों में अफरातफरी मच गई और जान बचाने के लिए लोग बाहर कूदने लगे। इस दौरान कई यात्री चोटिल हो गए। सूचना मिलते ही रेलवे पुलिस और स्थानीय प्रशासन की टीमें मौके पर पहुंचीं, जिन्होंने आग पर काबू पाने का प्रयास किया। एक घंटे में आग पर काबू पा लिया गया और ट्रेन रवाना कर दी गई है। ट्रेन ने सुबह 7 बजे सरहिंद स्टेशन पार किया। इसी दौरान एक यात्री को ट्रेन की एसी बोगी नंबर 19 से धुआं उठता दिखा। उसने तुरंत शोर

मचाते हुए चेन खींच दी। धुएं के साथ आग की लपटें भी उठने लगीं तो अफरातफरी मच गई। इसी दौरान कई यात्री बोगी से उतरने लगे। इसमें कुछ यात्री चोटिल भी हो गए। टीटीई और ट्रेन के पायलट मौके पर पहुंचे। उन्होंने तुरंत इसकी सूचना रेलवे कंट्रोल को दी। रेलवे की ओर से जारी बयान में कहा गया कि शनिवार सुबह साढ़े 7 बजे पंजाब के सरहिंद स्टेशन पर ट्रेन संख्या 12204 अमृतसर-सहरसा के एक डिब्बे में आग लग गई। घटना का पता चलते ही रेलवे अधिकारियों ने तुरंत कार्रवाई करते हुए यात्रियों को दूसरे डिब्बों में भेज दिया और आग भी जल्दी बुझा दी गई। कोई हताहत नहीं हुआ। शुरुआती जांच में आग लगने का कारण शॉर्ट सर्किट बताया गया है।

दिल्ली में सांसदों के लिए बने अपार्टमेंट में लगी आग

- यहां कई एमपी और उनके स्टाफ के लोगों के हैं फ्लैट

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली के वीआईपी रोड पर मौजूद सांसदों के लिए बने कावेरी अपार्टमेंट में शनिवार दोपहर आग लग गई। यहां पर कई सांसदों और उनके स्टाफ के घर (फ्लैट) हैं। लोगों का आरोप है कि फायर बिग्रेड को घटना की जानकारी देने के बाद भी टीम ने मौके पर आने में देरी की। 4 मंजिल तक के फ्लैट में आग लगने की खबर है। वहीं, घटना पर दिल्ली फायर सर्विसेज के अधिकारियों ने बताया कि दोपहर करीब 1.22 बजे आग लगने की सूचना मिली थी।

आजादी के 78 साल बाद बदल गई है पूरी तस्वीर

अब भारतीय वायुसेना के ट्रेनर देंगे ब्रिटिश पायलटों को ट्रेनिंग

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और ब्रिटेन के बीच रक्षा सहयोग के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक अध्याय जुड़ने जा रहा है। जिस देश ने कभी भारत में 'रॉयल इंडियन एयर फोर्स' की नींव रखी थी, अब उसी ब्रिटेन की रॉयल एयर फोर्स के फाइटर पायलटों को भारतीय वायुसेना के अनुभवी प्रशिक्षक ट्रेनिंग देंगे। रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय वायुसेना के दो

शीर्ष फाइटर पायलट प्रशिक्षक जल्द ही ब्रिटेन के आरएएफ वैली एयरबेस में तैनात होंगे, जो वेल्स के उत्तर-पश्चिम तट पर एंगल्सी द्वीप पर स्थित है। यहां वे ब्रिटिश एयरफोर्स के पायलट कैडेट्स को एडवांस्ड जेट ट्रेनर विमान पर ट्रेनिंग देंगे। यह वही विमान है जिस पर ब्रिटेन के अगली पीढ़ी के फाइटर पायलट टाइफून और एफ-35 जैसे फ्रंटलाइन जेट्स की तैयारी करते हैं। रॉयल एयर फोर्स के एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि यह पहल दोनों देशों ने की है।

- **भारत दुनिया की तीसरी सबसे शक्तिशाली वायुसेना-** 'वर्ल्ड डायरेक्टरी ऑफ मॉडर्न मिलिट्री एयरक्राफ्ट' की रैंकिंग के मुताबिक, अमेरिका और रूस के बाद भारतीय वायुसेना दुनिया की तीसरी सबसे शक्तिशाली वायुसेना है। ब्रिटेन इस सूची में आठवें स्थान पर है। आरएएफ अधिकारी के अनुसार, भारतीय ट्रेनरों की भागीदारी से आरएएफ को न केवल सामरिक लाभ मिलेगा, बल्कि दोनों देशों के बीच तकनीकी और टैक्टिकल ज्ञान का आदान-प्रदान भी बढ़ेगा। अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षकों और कैडेट्स के बीच बातचीत से उड़ान तकनीकों और प्रक्रियाओं का साझा अनुभव विकसित होगा, जो भविष्य की संयुक्त अभियानों में सहायक सिद्ध होगा।

अमित शाह से मिले चिराग एनडीए की जीत का किया दावा

बोले-एलजेपी का लक्ष्य 100 प्रतिशत स्ट्राइक रेट

पटना (एजेंसी)। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह इन दिनों बिहार के दौरे पर हैं। शनिवार को उनसे लोजपा (रामविलास) के प्रमुख चिराग पासवान ने मुलाकात की और चुनावी रणनीतियों पर चर्चा की। बिहार विधानसभा चुनाव को लेकर इस मुलाकात को बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है। मुलाकात के बाद लोजपा (रामविलास) के प्रमुख और केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने एनडीए की जीत का दावा किया। मुलाकात के बाद केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने मीडिया से बातचीत में कहा कि उनकी पार्टी का लक्ष्य इस चुनाव में भी 100 प्रतिशत स्ट्राइक रेट से चुनाव जीतना होगा।

मां से अफेयर के शक में दोस्त की हत्या

भोपाल में तीन युवकों ने पहले गला रेता, फिर पत्थर से सिर कुचलकर मार डाला

भोपाल (नप्र)। भोपाल में तीन युवकों ने अपने दोस्त का गला रेता, फिर पत्थर से सिर कुचलकर हत्या कर दी। एक आरोपी को शक था कि उसकी मां और मृतक का अफेयर है। दो दिन पहले आरोपियों ने उसे घर के आसपास नहीं दिखने के लिए कहा था। साथ ही जान से मारने की धमकी भी दी थी। तीनों आरोपी पुलिस हिरासत में हैं। डीसीपी आशुतोष गुप्ता ने बताया कि आशीष उईके (25) पुताई ठेकेदारी करता था। वह हबीबगंज की श्याम नगर मल्टी में रहता था। वहीं, आरोपी रंजीत सिंह, उसके साथी विनय यादव और निखिल यादव से आशीष का पुराना विवाद था।

खून से लथपथ मिला शव–शनिवार की तड़के हबीबगंज थाना पुलिस को सूचना मिली कि श्याम नगर मल्टी में युवक की खून से लथपथ लाश पड़ी है। डीसीपी आशुतोष गुप्ता सहित एसीपी उमेश तिवारी और थाना हबीबगंज का स्टाफ पहुंचा। एफएसएल की टीम से भी स्पॉट का मुआयना कराया गया। गले पर धारदार हथियार से रेते जाने के निशान मिले। सिर और चेहरे को पत्थर से कुचला गया था। पास ही खून से सना बड़ा पत्थर पड़ा था।

दो दिन पहले भी हुआ था विवाद–जांच के दौरान मुखबिर से आरोपियों की जानकारी मिली। बताया गया कि रंजीत ठाकुर और आशीष के बीच दो दिन पहले विवाद हुआ था। तब आरोपी ने आशीष को उसके घर के आसपास न दिखने की हिदायत दी थी। रंजीत को आशीष और अपनी मां के बीच अफेयर का संदेह था।

आशीष को देखते ही मार डाला–आशीष शनिवार तड़के फिर उसके घर के पास पहुंचा, जहां विनय और निखिल रंजीत के साथ पहले से मौजूद थे। आशीष को देखते ही तीनों ने उसे मौत के घाट उतार दिया। बताया जा रहा है कि रंजीत और आशीष के बीच पहले गहरी दोस्ती थी। इसी कारण उसका रंजीत के घर आना-जाना था।

भोपाल में अगवा बच्ची को मिले दो दिन बीते

मेडिकल रिपोर्ट में अब भी कन्फ्यूजन, अब एफएसएल रिपोर्ट का इंतजार

भोपाल (नप्र)। भोपाल के हबीबगंज इलाके में बुधवार देर रात एक युवक ने मंदिर के बाहर से पांच साल की बच्ची का अपहरण कर लिया था। गुरुवार सुबह बच्ची को बरामद कर लिया गया था। बच्ची के मेडिकल में मारपीट की पुष्टि हुई थी, जेपी अस्पताल में हुए मेडिकल परीक्षण में यह साफ नहीं हो सका था कि बच्ची के साथ किसी प्रकार का दुष्कृत्य हुआ कि नहीं। मामले का एफएसएल की टीम से भी परीक्षण कराया था। इसकी रिपोर्ट मिलना शेष है। जिसके बाद तय होगा की आरोपी के खिलाफ पास्को की धाराओं में इजाफा हो कि नहीं। जानकारी के मुताबिक गुरुवार सुबह बच्ची को आईएसबीटी गोविंदपुरा से बरामद कर लिया गया था। अज्ञात आरोपी वहां सर्चिंग देखने के बाद बच्ची को छोड़कर फरार हो गया था। हालांकि सीसीटीवी फुटेज के आधार पर पुलिस ने आरोपी की पहचान कर ली है। जल्द पुलिस पूरे मामले का खुलासा कर सकती है। केस की जांच के लिए पुलिस की अलग-अलग पांच टीमें काम कर रही हैं।

परिजनों की मौजूदगी में कराया गया था मेडिकल परीक्षण–गुरुवार को लेबर रूम में परिजनों की मौजूदगी में बच्ची का मेडिकल कराया गया था। उसे निमोनिया होने की भी पुष्टि हो गई। इलाज के लिए उसे अस्पताल में भर्ती करा लिया गया था। जहां उसकी काउंसलिंग भी कराई और उसका इलाज जारी है। आरोपी ने बच्ची के चेहरे और सिर पर भी मारपीट की थी। इसके निशान बच्ची के शरीर पर मिले थे। घबराई बच्ची फिलहाल गुमसुम है। बच्ची को आब्जर्वेशन में रखा गया है। काउंसलिंग के माध्यम से इस बात का पता लगाया जा रहा है कि बच्ची के साथ गलत काम तो नहीं किया गया है। हालांकि, अब तक बच्ची के साथ गलत काम की पुष्टि नहीं हो सकी है। पुलिस ने बच्ची को अगवा करने के शक में एक युवक को हिरासत में लिया है। इसका हुलिया सीसीटीवी फुटेज में दिख रहे आरोपी जैसा है। उससे पूछताछ की जा रही है।

पटाखा गन चेक करते वक्त फायर, बच्चे की आंख डैमेज

एम्स ने जारी की एडवाइजरी; पिछली दिवाली आए थे 52 केस, एक की मौत

भोपाल (नप्र)। भोपाल में पटाखा गन से 11 साल के बच्चे की आंख की पलक जल गई। पुतली पर सफेदी (ल्यूकोकोरिया) छा गई। इस साल दिवाली का यह पहला केस गांधी मेडिकल कॉलेज के नेत्र विभाग में पहुंचा है। अब बच्चे की आंख बचाने के लिए शनिवार को सर्जरी की जाएगी। घटना गुरुवार रात की है। बच्चा पटाखा गन लोड करने के बाद चेक कर रहा था, तभी गन चल गई। पटाखा उसकी आंख में लग गया। GMC के नेत्र विभाग के मुताबिक बच्चे को प्राथमिक उपचार दे दिया गया है। सभी जांचें पूरी कर ली गई हैं।

प्रदेश में धनतेरस पर सजे बाजार, उमड़ी भीड़

ग्राहकों के लिए बिछाई रेड कारपेट, विजयवर्गीय ने पुश्तैनी दुकान पर तौला सामान, भोपाल में लग्जरी प्रॉपर्टी-कारों की डिमांड थी ज्यादा

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मुख्यमंत्री आवास में धनतेरस पर भगवान धन्वंतरि की पूजा अर्चना कर नागरिकों की सुख-समृद्धि,धनैश्वर्य एवं कल्याण की प्रार्थना की।

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में धनतेरस पर्व की शुरुआत उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर से हुई। शनि प्रदोष और धनतेरस के पावन संयोग पर महापूजा की गई। भोपाल में लग्जरी प्रॉपर्टी और कारों की डिमांड ज्यादा दिखाई दे रही थी। इंदौर के सराफा बाजार में ग्राहकों के लिए रेड कारपेट बिछाई गई है। बर्तन की दुकान को 44 फीट हाइट तक बर्तनों से सजाया गया है।

इंदौर में मंत्री कैलाश विजयवर्गीय धनतेरस पर अपनी पुश्तैनी दुकान पर बैठे। उन्होंने ग्राहकों सामान तौलकर दिया। साथ ही बताया कि इस दुकान की शुरुआत उनके माता-पिता ने की थी। वहीं, बुरहानपुर एसपी देवेंद्र कुमार पाटीदार ने पत्नी के साथ फुटपाथ पर बैठे दुकानदारों से खरीदारी की।

उन्होंने कहा कि त्योहारों पर स्थानीय दुकानदारों से खरीदारी कर उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाना हर नागरिक का दायित्व है।

एमपी में 2500 करोड़ के कारोबार की संभावना

धनतेरस पर बाजारों में भीड़ उमड़ रही थी। ऑटोमोबाइल सेक्टर से लेकर सोने-चांदी के आभूषण के शोरूम में हर वर्ग के ग्राहक खरीदारी के लिए पहुंच रहे हैं।

वहीं, परंपरागत रूप से धनतेरस पर खरीदे जाने वाले सामान भी व्यवसायियों ने खास तैयारी के साथ बाजार में उपलब्ध कराए हैं। इस साल मध्य प्रदेश में 2500 करोड़ से अधिक के कारोबार की संभावना बताई।

शनि प्रदोष पर महाकाल मंदिर में धनतेरस पर्व मनाया

पुरोहित परिवार ने किया महापूजन, चांदी के सिक्के भेंट किए, कुबेर की नाभि में इत्र लगाया

उज्जैन (नप्र)। उज्जैन के श्री महाकालेश्वर मंदिर में शनिवार को शनि प्रदोष और धनतेरस के पावन संयोग पर महापूजा की गई। धनतेरस की शुरुआत भगवान महाकाल के आंगन से हुई। मंदिर के पुरोहित परिवार ने भगवान महाकाल की महापूजा कर विश्व शांति, जनकल्याण, सुख, समृद्धि और आरोग्यता की कामना की।

इस अवसर पर महाकाल के साथ कुबेर देव और चांदी के सिक्कों का पूजन-अभिषेक किया गया। चांदी के सिक्के भगवान को अर्पित किए गए, जो धन-समृद्धि के प्रतीक माने जाते हैं। मंदिर में सुबह से ही भक्तों की भारी भीड़ उमड़ रही है।

गर्भगृह की देहरी पर दीपक अर्पित किए–नंदी हॉल में सुबह 10 बजे से पूजन आरंभ हुआ, जिसमें पुरोहित समिति द्वारा गणपति पूजन, महालक्ष्मी पूजन, पंचामृत स्नान और रुद्राभिषेक संपन्न कराया गया। लगभग एक घंटे तक चली इस पूजा में संभाग आयुक्त आशीष सिंह, कलेक्टर रौशन कुमार सिंह और एसपी प्रदीप कुमार सहित कई अधिकारी मौजूद रहे। पूजन के बाद गर्भगृह की देहरी पर दीपक अर्पित कर महाकाल का आशीर्वाद लिया गया।

भगवान महाकाल को लगेगा उबटन–मंदिर प्रशासन ने बताया कि 20 अक्टूबर को दिवाली और अन्नकूट पर्व का आयोजन होगा। सुबह पुजारी परिवार की महिलाएं भगवान महाकाल को उबटन लगाएंगी। इसके बाद गर्भगृह में 56 भोग का अन्नकूट लगाया जाएगा। शाम को कोटितीर्थ कुंड पर हजारों दीपक प्रज्जवलित कर महाआरती की जाएगी। वहीं, 22 अक्टूबर को गोवर्धन पूजा का पर्व मनाया जाएगा।

कुबेर देव का किया गया पूजन–इधर, श्री सांदीपनि आश्रम परिसर स्थित 84 महादेवों में से कुंडेश्वर महादेव मंदिर में भी विशेष आयोजन हुआ। यहां गर्भगृह में स्थापित कुबेर देव की प्राचीन प्रतिमा का आभूषणों से श्रृंगार कर विशेष पूजन किया गया। साल में केवल एक बार धन त्रयोदशी पर इस प्रतिमा की पूजा होती है। कुबेर की नाभि में इत्र लगाया मंदिर के पुजारी शिवांश व्यास ने बताया कि पौराणिक मान्यता के अनुसार धनतेरस के दिन कुबेर की नाभि में इत्र लगाने से धन और समृद्धि की प्राप्ति होती है। श्रद्धालुओं ने प्रतिमा की नाभि में इत्र लगाकर मिष्ठान और अनार का भोग अर्पित किया। मंदिर के शिखर पर स्थापित श्री यंत्र भी श्रद्धालुओं के आकर्षण का केंद्र रहा।

धन त्रयोदशी पर खरीदी के शुभ मुहूर्त यह थे ज्योतिषाचार्य पं. अमर डब्बावाला ने बताया कि ब्रह्म योग में धन त्रयोदशी होने के साथ ही शनि प्रदोष का संयोग भी है। शनिवार के दिन धनतेरस के पर्व काल पर गृह उपयोगी वस्तुओं की खरीदी के श्रेष्ठ मुहूर्त प्रातः दो मुहूर्त थे। अब दोपहर 2 बजे तक चंचल, दोपहर 2 बजे से 3:30 तक लाभ, दोपहर 3:30 से सांय 5 बजे तक अमृत, सायं 5:55 बजे से रात 7:25 बजे तक लाभ (इसी में प्रदोष काल का भी श्रेष्ठ समय) और रात्रि 8:55 बजे से रात 10:25 बजे तक शुभ मुहूर्त में खरीदारी की जा सकेगी।

बाघ की मौत के बाद बालाघाट डीएफओ को चार्जशीट

सीनियर अफसरों को जानकारी दिए बगैर मादा बाघ का शव जलाया; आरोपी वनकर्मी फरार

भोपाल (नप्र)। बालाघाट में एक मादा बाघ की मौत के बाद सीनियर अफसरों को जानकारी दिए बगैर उसका

शव जलाने का मामला सामने आया है। इसकी जानकारी के बाद यहां के डीएफओ अधर गुप्ता को सरकार ने चार्जशीट जारी किया है। गुप्ता से 15 दिन में जवाब मांगा गया है। उधर गुप्ता की पत्नी और बालाघाट में ही पदस्थ आईएफएस अफसर नेहा श्रीवास्तव पहले ही कांग्रेस विधायक द्वारा रुपए मांगे जाने को लेकर विवादों में हैं। अधर गुप्ता दक्षिण बालाघाट वन मंडल के डीएफओ हैं। इन वनमंडल में लालबर्रा के अहियाटिकुर बीट में वन्य जीवों की सुरक्षा को लेकर उचित प्रबंध नहीं किए गए हैं। यह क्षेत्र डीएफओ अधर गुप्ता के कार्यक्षेत्र में आता है। उन्हें दी गई चार्जशीट में इस मामले में भी जवाब तलब किया गया है।डीएफओ अधर गुप्ता पर मादा बाघ की मौत छिपाने और शव जलाने का आरोप है।

खुद के घर की खुशी से बढ़कर कुछ नहीं : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

– आवास हितग्राहियों के लिये है यह विशेष दिवाली, सबको आवास देना ही हमारा लक्ष्य – नीमच में तैयार 348 एएचपी आवास कॉलोनी का किया वर्चुअल लोकार्पण

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि अपना घर हर किसी का सपना होता है। अपने घर की खुशी से बढ़कर और कुछ नहीं होता। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश के 4 करोड़ से अधिक लोगों को उनका मकान बनाकर दिया है। प्रधानमंत्री का खुद का कोई घर नहीं है, लेकिन देश के सभी नागरिकों को मकान देना उन्होंने अपना लक्ष्य तय किया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि आज नीमच के 348 परिवार अपने सालों पुराने सपने को हकीकत में बदलते देख रहे हैं। यह दिवाली उनके जीवन की सबसे सुंदर दीपावली बनकर आई है, क्योंकि इस बार सभी अपने घर में में दिवाली मनाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने शनिवार को मुख्यमंत्री निवास स्थित समत्व भवन से नगर पालिका नीमच द्वारा प्रधानमंत्री आवास योजनान्तर्गत अफोर्डेबल हाऊसिंग प्रोजेक्ट के तहत निर्मित आवासों की सुंदर कॉलोनी का वर्चुअल लोकार्पण कर हितग्राहियों को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यहां 348 परिवारों को गृह प्रवेश कराया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नए घर के लाभार्थियों से संवाद कर सभी को धनतेरस के दिन मिले नये आवास और पंच दिवसीय दीपोत्सव की मंगलकामनाएं भी दीं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी कहते हैं कि जब गरीब का घर रोशन होता है, तभी देश में सच्ची दीपावली होती है। आज मध्यप्रदेश इसी दिशा में आगे बढ़ रहा है। लक्ष्मी-गणेश की कृपा से मध्यप्रदेश जन-कल्याण और विकास की दीपावली मना रहा है।

उन्होंने कहा कि हमारी नीयत साफ है, हमारी नीतियां गरीबों को सशक्त करने की हैं एक दौर वो भी था जब गरीबों के नाम पर योजनाएं तो बनती थीं, लेकिन उनका लाभ कई पुश्तों के बाद भी गरीब को नहीं मिल पाता था। प्रधानमंत्री आवास योजना के माध्यम से हितग्राहियों को छत ही नहीं, स्वाभिमान और सुरक्षा दोनों मिली है। प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) 2.0 योजना के तहत हम 10 लाख आवास बनाएंगे। हम इसी दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहे हैं। पीएम आवास योजना (शहरी) के क्रियान्वयन में मध्यप्रदेश को बेस्ट परफार्मिंग स्टेट अवॉर्ड की श्रेणी में दूसरा स्थान मिला है। नीमच तो हमेशा से ही इस मामले में अव्वल रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि आज ही नीमच जिले में 134 करोड़ की लागत से पीएम आवास के 348 घरों की चाबियां सौंपी जा रही हैं। जिसमें 144 मकान EWS के, 144 मकान LIG और 60 मकान MIG के शामिल हैं। साथ ही 33 कमर्शियल प्लॉट भी हैं। आज जो मल्टी स्टोरी आवास प्रदान किए जा रहे हैं, यह सिर्फ मकान नहीं, बल्कि एक पूरा परिसर विकसित हो रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि यहां चमचमाती सड़कें, व्यवस्थित नालियां, ओवरहेड टैंक और सीवरेज पंपिंग स्टेशन की व्यवस्था की गई है। स्ट्रीट लाइट, सुरक्षा के लिए गेट और बाउंड्री वॉल बनाई गई हैं। बच्चों के खेलने के लिए पार्क की स्थापना की गई है। कैंपस में हेल्थ केयर सेंटर (प्राथमिक उपचार केन्द्र), बस स्टॉप, फायर सुविधा भी है। यहां स्कूल बनाने के लिए भूमि भी आरक्षित की गई है। यानी हर ज़रूरत का पूरा ध्यान रखा गया है। यह समेकित परियोजना एक सच्चे मायनों में सम्मानजनक जीवन और बेहतर भविष्य की नींव रखती है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमारा संकल्प है कि प्रदेश में हर गरीब के पास पक्का मकान हो। प्रधानमंत्री आवास योजना के माध्यम से शहरी गरीबों को पक्के घर देने की दिशा में मिशन मोड पर काम जारी है। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश में पीएम आवास योजना के तहत अब तक 49 लाख से अधिक परिवारों का अपने घर का सपना पूरा हुआ है।

भक्तों के 2 करोड़ से सजा देश का इकलौता महालक्ष्मी मंदिर

5 दिन नोट-आभूषणों से सजा रहेगा, भक्तों ने तिजोरियां भी लाकर रखीं

रतलाम (नप्र)। रतलाम में मां महालक्ष्मी का मंदिर सज चुका है। सजावट फूलों से नहीं, हीरे, जवाहरात और नोटों से हुई है। मंदिर की हर लड़ में नोट लगे हैं। किसी में 10 तो किसी में 500 रुपए नजर आ रहे हैं। इस अद्भुत सज्जा के लिए भक्तों ने अपनी तिजोरी खोल दी है। मंदिर में अर्पित नकदी-आभूषण को दीपोत्सव के पांच दिन के बाद समिति प्रसादी के रूप में भक्तों को लौटाएगी। मंदिर की सजाने की सालों पुरानी परंपरा के तहत इस साल 2 करोड़ रुपए से मंदिर को सजाया गया है। आज तक यहां से एक रुपया इधर से उधर नहीं हुआ है। धन राशि देने वालों में रतलाम के अलावा प्रदेश समेत अन्य राज्यों से भी बड़ी संख्या में भक्त आते हैं।

दीपोत्सव के पहले दिन यानी धनतेरस से मंदिर की सजावट को भक्त निहार सकते हैं। संभवतः यह देश का पहला ऐसा मंदिर है, जो पांच दिनों तक भक्तों द्वारा अर्पित आभूषण और नोटों से सजा रहता है

आखिर यह परंपरा शुरू कैसे हुई...?–मंदिर में पूजा कराने वाले अश्विनी पुजारी बताते हैं कि करीब 300 साल पुराना महालक्ष्मी जी का यह मंदिर रियासतकालीन है। रतलाम के महाराजा रतन सिंह राठौर ने जब रतलाम शहर बसाया, तब से यहां दीपावली धूमधाम से मनाई जाने लगी। राजा वैभव, निरोगी काया और प्रजा की खुशहाली के लिए पांच दिन तक अपनी संपदा मंदिर में रखकर आराधना कराते थे। इसके लिए महाराजा शाही खजाने के सोने-चांदी के आभूषण मां लक्ष्मी जी के श्रृंगार के लिए चढ़ाते थे, तभी से ये परंपरा चली आ रही है।

धीरे-धीरे व्यवस्था बदलती गई और भक्त मंदिर के लिए चढ़ावा लेकर आने लगे। पिछले कई सालों से मंदिर की सजावट नोट और आभूषणों से की जा रही है। श्रद्धालु अपनी स्वेच्छा से मंदिर की सजावट के लिए अपनी तिजोरी

खोलते हैं। अभी यह मंदिर सरकारी होकर कोर्ट ऑफ वार्डस में आता है। प्रशासन भी सजावट को लेकर पूरी निगरानी रखता है।

मंदिर में आखिर क्या है खास.–मंदिर के गर्भगृह में महालक्ष्मी की मूर्ति के साथ ही गणेश जी व सरस्वती मां की भी मूर्ति स्थापित है। लक्ष्मी की मूर्ति के हाथ में धन की थैली रखी है, जो वैभव का प्रतीक है। साथ मंदिर में महालक्ष्मी 8 रूप में विराजमान हैं। जिनमें अधी लक्ष्मी, धान्य लक्ष्मी, लक्ष्मीनारायण, धन लक्ष्मी, विजयालक्ष्मी, वीर लक्ष्मी, संतान लक्ष्मी और ऐश्वर्य लक्ष्मी मां विराजमान हैं। पुजारी बताते हैं कि दीपावली पर्व हिंदुओं का सबसे बड़ा त्योहार है। दीपावली धन, वैभव का त्योहार है, जहां पर विष्णु भगवान के हाथों में महालक्ष्मी विराजमान हैं। सभी भक्त चाहते थे कि माताजी का वास्तविक स्वरूप, जो पुराणों, वेदों में दिखाया जाता है। यानी माता धन वर्षा कर रही हैं, भक्त यहां आकर उसी रूप की अनुभूति करते हैं। मान्यता है कि जिस व्यक्ति का धन महालक्ष्मी के श्रृंगार में इस्तेमाल होता है, उसके घर में सुख-समृद्धि बनी रहती है।

दीपावली के एक सप्ताह पहले से सजावट–महालक्ष्मी मंदिर में हर साल दीपावली के एक सप्ताह पहले से सजावट की तैयारी शुरू हो जाती है। शरद पूर्णिमा से ही यहां रुपए और गहने पहुंचने का सिलसिला शुरू हो जाता है। मंदिर को 1 रुपए से लेकर 20, 50, 100 और 500 रुपए के नए नोटों से सजाया जाता है। इस बार सजावट के लिए रतलाम, झाबुआ, मंदसौर, नीमच के अलावा गुजरात, राजस्थान के भक्त ने श्रद्धानुसार राशि जमा कराई है।कई भक्त तो ऐसे भी हैं, जिन्होंने एक साथ 5 लाख रुपए तक मंदिर को दिए हैं। श्रद्धालुओं द्वारा दिए जाने वाले नोटों से मंदिर के लिए वंदनवार बनाया जाता है। महालक्ष्मी का आकर्षक श्रृंगार कर गर्भगृह को खजाने के रूप में सजाया जाता है।

एक रुपए का भी हेरफेर नहीं, इसलिए यह व्यवस्था–मंदिर की सजावट के लिए जो भक्त श्रद्धानुसार धन राशि, आभूषण सजावट के लिए देते हैं, उनकी बाकायदा एंट्री होती है। इस बार इसमें बदलाव कर डिजिटलाइजेशन कर दिया गया। नोट गिनने की मशीन का भी इस्तेमाल किया गया है।ऑनलाइन एंट्री में नकदी व आभूषण देने वाले भक्तों का नाम, पता, पासपोर्ट फोटो और मोबाइल नंबर के साथ क्या धन राशि या आभूषण दी।

दिवाली से पहले अतिथि शिक्षकों के मामले में झुकी सरकार

अब जुलाई और अगस्त का वेतन ई-अटेंडेंस के बिना पा सकेंगे 70 हजार गेस्ट टीचर

भोपाल (नप्र)। दिवाली से पहले मध्यप्रदेश के 70 हजार से अधिक अतिथि शिक्षकों को राज्य सरकार ने जुलाई और अगस्त का वेतन बिना ई-अटेंडेंस के देने का फैसला किया है। इस संबंध में शुक्रवार को लोक शिक्षण संचालनालय द्वारा जारी आदेश में कहा गया है कि भविष्य में इसे उदाहरण न माना जाए। चूंकि यह जानकारी सामने आई है कि सही जानकारी न होने के कारण कई स्थानों पर अतिथि शिक्षक ई-अटेंडेंस नहीं लगा पाए, इसलिए शिथिलता बरतते हुए जुलाई और अगस्त का वेतन विद्यालय में उपस्थिति के आधार पर देने का निर्णय लिया गया है।

शुक्रवार को लोक शिक्षण आयुक्त कार्यालय द्वारा जारी निर्देश में कहा गया है कि स्थानीय स्तर पर जानकारी के अभाव और ई-अटेंडेंस की प्रक्रिया प्रारंभिक चरण में होने के कारण कुछ अतिथि शिक्षक जुलाई और अगस्त 2025 में कुछ दिनों की ई-अटेंडेंस दर्ज नहीं कर पाए हैं। इसलिए प्रशासकीय आधार पर यह निर्णय लिया गया है कि ऐसे अतिथि शिक्षक, जो किसी कारणवश किसी दिन की ई-अटेंडेंस दर्ज नहीं कर सके हैं, उनके लिए शाला प्रभारी संबंधित शिक्षक की उपस्थिति पंजी के आधार पर सत्यापित प्रति पोर्टल 3.0 पर अपलोड करेंगे।

सावधान, आप ईश्वर ही नहीं, कैमरे की नज़र में भी हैं

मनुष्य जीवन अनेक प्रकार की परिस्थितियों से गुजरता है। कभी सुख मिलता है तो कभी दुख, कभी सफलता तो कभीअसफलता। इन सबके बीच एक विश्वास, एक आस्था हमें मार्ग दिखाती है—'भगवान सब देखता है'। यह वाक्य न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि जीवन की नैतिकता और आचार-व्यवहार को भी गहराई से प्रभावित करता है। 'भगवान सब देखता' है का सीधा अर्थ है कि ईश्वर सर्वव्यापी और सर्वज्ञानी है। वह हमारे हर अच्छे और बुरे कार्य का साक्षी है। इंसान समाज और परिवार से अपने गलत कर्मों को छिपा सकता है, लेकिन भगवान से नहीं। यही विचार मनुष्य को अनुशासन, सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है ।

विचार
रागिनी श्रीवास्तव
लेखक कनाडा निवासी साहित्यकार हैं।

'सर्वज्ञः भगवान् सर्वदा सर्वत्र सर्वं पश्यति,
आकाशस्थितः उपग्रहदर्शकः अपि पृथिव्यां सर्वं पश्यति।'

'अर्थात् सर्वज्ञ भगवान हमेशा, हर जगह, सब कुछ देख सकते हैं। आकाश में स्थित उपग्रह-दर्शक (सैटेलाइट कैमरा)भी पृथ्वी पर सब कुछ देखता है।'

मनुष्य जीवन अनेक प्रकार की परिस्थितियों से गुजरता है। कभी सुख मिलता है तो कभी दुख, कभी सफलता तो कभीअसफलता। इन सबके बीच एक विश्वास, एक आस्था हमें मार्ग दिखाती है–'भगवान सब देखता है'। यह वाक्य न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि जीवन की नैतिकता और आचार-व्यवहार को भी गहराई से प्रभावित करता है।'भगवान सब देखता है' का सीधा अर्थ है कि ईश्वर सर्वव्यापी और सर्वज्ञानी है। वह हमारे हर अच्छे और बुरे कार्य का साक्षी है। इंसान समाज और परिवार से अपने गलत कर्मों को छिपा सकता है, लेकिन भगवान से नहीं। यही विचार मनुष्य को अनुशासन, सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करता है।

यदि हम इस वाक्य को नैतिक दृष्टि से देखें तो इसका संदेश यह है कि मनुष्य को सदैव अच्छे कार्य करने चाहिए। चोरी, धोखा, छल-कपट या अन्याय के मार्ग से यदि कोई क्षणिक लाभ भी मिल जाए, तो अंततः उसका परिणाम बुरा ही होता है, क्योंकि भगवान सब देख रहा है। यही विश्वास हमें संभालता है और हमारे जीवन को जीने की शक्ति प्रदान करता है ।

आज के इस तकनीकी युग में केवल भगवान् ही नहीं हमें देख रहे है अपितु भगवान के साथ पृथ्वी के ऊपर लगातार उड़ते हुए हज़ारों कृत्रिम उपग्रहों में स्थापित कैमरे भी लगातार हम पर और पृथ्वी पर होने वाली गतिविधियों पर नज़र रखे हुए है। इनके माध्यम से अनेक प्रकार से पृथ्वी की तस्वीरें ली जाती है और सूचनाएं एकत्रित की जाती है .छिपे हुएसीसीटीवी कैमरे लगातार आप पर नज़र रखते है। ये कैमरे सुरक्षा में वृद्धि करते हैं , साक्ष्य प्रदान करते है और अपराधियों को पकड़ने में मदद करते हैं।

सैटेलाइट कैमरों की मदद से मौसम का पूर्वानुमान लगाया जाता है, खेती के हालात पर निगरानी रखी जाती है, नदियों, समुद्रों और जंगलों की स्थिति का पता लगाया जाता है। सेना और सुरक्षा एजेंसियाँ भी इनका उपयोग सीमाओं की निगरानी और दुश्मनों की गतिविधियों को समझने के लिए करती हैं। भारत-पाक संघर्ष का हीरो आकाशतीर डिफेंस सिस्टम की मदद से भारत ने पाकिस्तान की ओर से आ रहे सैकड़ों ड्रोन, मिसाइल और रॉकेट को हवा में ही मार गिराया था।

कभी सैटेलाइट कैमरा का नाम सुनते ही हमें अंतरिक्ष, रॉकेट और वैज्ञानिक प्रयोगशालाएँ याद आती थी, लेकिन आज, यह तकनीक इतनी व्यापक हो चुकी है कि हम अनजाने में हर दिन इसका उपयोग कर रहे हैं – वास्तव में सैटेलाइट कैमरे ने हमारे जीवन को अधिक सुविधाजनक,सुरक्षित और सूचनाप्रद बना दिया है।

उपग्रह कैमरा तकनीक ने जीवन को न केवल कई तरह से आसान बना दिया है बल्कि हमारे घरों में घुस पैठ कर गूगल होम, एलेक्सा और जीपीएस सिस्टम आदि को हमारे जीवन का एक हिस्सा भी बना दिया है हमारी दिन प्रतिदिन के वार्तालाप कार्यप्रणाली, आवश्यकताओं शिक्षा आदि सभी पर तीखी नज़र रखी है। उदहारण स्वरुप हम जिस भी विषय पर गूगल सर्च करते है उसी से सम्बंधित विज्ञापन तुरंत देखने को मिल जाते है। अलेक्सा और गूगल होम वॉइस असिस्टेंट के रूप में काम करते है यह डिवाइसेस पल भर में हमारे सवालों के जवाब दे देते है अन्य स्मार्ट होम डिवाइसों को नियंत्रित कर सकता है, जैसे GPS सिस्टम,लाइट्स, थर्मोस्टैट्स, सुरक्षा कैमरे, आदि विभिन्न प्रकार का संगीत भी सुन सकते हैं,एलेक्सा हम लोगो को अमेज़न पर खरीदारी करने और ऑर्डर ट्रैक करने में मदद करती है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत की सैटेलाइट कैमरा तकनीक ने न केवल आत्मनिर्भरता हासिल की है, बल्कि यह वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बन गई है।

कार्टोसैट श्रंखला के उपग्रहों में अत्याधुनिक पंच्रोमैटिक और मल्टीस्पेक्ट्रल कैमरे लगे हैं, जो पृथ्वी की सतह की तस्वीरें मात्र 25 से 65 सेंटीमीटर की सूक्ष्मता तक ले सकते हैं) से लेकर आदित्य एल् तक की यह यात्रा भारत की वैज्ञानिक क्षमता, नीति-निर्माण और दूरदर्शिता का प्रमाण है।

आज भारत न केवल अपने भूभाग बल्कि चंद्रमा और सूर्य की भी इमेजिंग क्षमता रखता है – यह 21वीं सदी के 'नए अंतरिक्ष भारत' की पहचान है।

हैदराबाद की इसरो साइंटिस्ट हरिप्रिया साकेतपुरम हाल ही में 'कौन बनेगा करोड़पति 17' में आईं और उन्होंने बतलाया कि ऊपर अंतरिक्ष में एक सेटेलाइट कैमरा नेटवर्क है जो सबको देख रहा है, जिससे डेटा एकत्र किया जाता है और वैज्ञानिक समय समय पर उसका उपयोग करते है,आज पृथ्वी का कोई भी कोना सैटेलाइट कैमरों से छिपा नहीं है। उपग्रह कैमरे आधुनिक युग की आंख हैं, जो पृथ्वी को देखती है और हमें इसके बारे में जानकारी प्रदान करती है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि पृथ्वी और मनुष्य पर दोहरी नज़र है– एक विज्ञान की और दूसरी ईश्वर की। विज्ञान हमें भौतिक सुरक्षा देता है, जबकि ईश्वर की दृष्टि हमें नैतिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करती है।

'सुमिरत होत भंजन भारी, मिटत सकल अघ पाप हमारे।'

जब हम भगवान का नाम स्मरण करते है तो हमारे जीवन के सभी भारी कष्ट, दुख और बाधाएँ दूर हो जाते हैं, और हमारे सभी पाप और दोष मिट जाते हैं।

कैमरा धरि देखिए, सब रहस्य उजियार।
सच झूठ सब प्रकट हो, मिटे भ्रम अपार॥

कैमरे के डेटा से अंधकार (भ्रम, संदेह) दूर हो जाता है। जो चीज़ छिपी रहती है, वह उजागर हो जाती है। सच-झूठ का अंतर स्पष्ट हो जाता है और बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान संभव हो जाता है।

कविता

अंतर्मन के दीप

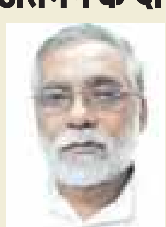

कमलेश कुमार दीवान

आओ अंतर्मन के
दीप प्रज्वलित करें आज हम
पथ पर अंधियारे फैलें हैं,
दिशा दिशा भ्रम हैं
सूरज चांद सितारे सब हैं,
पर उजास कम हैं
थके पके मन,ढंग मग पर है
भूले राह चले हम।
आओ अंतर्मन के
दीप प्रज्वलित करें आज हम।
मन मुटाव को दूर करें
शाश्वत मूल्य अपनाएं
जीवन चक्रव्यूह को भेद
निकल बाहर आ जाएं
आपा धापी बहुत हुई
हम भूले हैं अपने को
धन तृष्णा में भाग रहे हैं
अपनाए हैं सपनों को
आओ जन गण के समीप
साज़ सुसज्जित करे आज़ हम
आओ अंतर्मन के दीप प्रज्वलित करें
आज़ हम।

व्यंग्य

ट्विंकल तोमर सिंह

गणित के अत्याचार

एक रात्रि अपने समस्त क्रियाकलाप निपटाने के उपरांत ढोलक जी की पत्नी ने घोषणा की- 'सुनो, अभी तक पिंटू कक्षा तीन में था, मैं उसका गणित विषय देख लेती थी, अब चौथी कक्षा से गणित में जाने क्या क्या आ गया है, अब आप देख लीजिएगा।' ढोलक जी आँखें बंद किये सुखमयी तंद्रा में जाने वाले थे कि पत्नी की उदघोषणा से उनकी निद्रा योजना खटाई में पड़ गयी। जिस रहस्य को उन्होंने आज तक अपनी पत्नी से छुपा कर रखा था, उन्हें लगा वह उजागर होने का समय आ गया है। उन्हें गणित और गणित के मास्टर के किये हुए सारे अत्याचार याद आने लगे।

'बताओ किसी कार्य को दो पुरुष और एक स्त्री दो दिन में करते हैं, तो उसी कार्य को एक पुरुष और दो स्त्रियाँ कितने दिन में करेंगी?' बालक ढोलक जी ने जवाब दिया था कि मास्टर जी, दो स्त्रियाँ मिलकर काम कहाँ करेंगी? वे तो सिर्फ़ बात ही करेंगी, सारा काम फिर अकेले पुरुष को करना पड़ेगा। जवाब सुनते ही जो सोंटा मास्टर जी ने उनके हाथ पर मारा था, उसे याद करते ही आज भी उनका हाथ झन्ना गया।

गणित की टेस्ट कॉपी में मिले सारे शून्य उनके सिर के अंदर नवग्रह की तरह परिक्रमा करने लगे। उन्हें समझ ही नहीं आता था कि गणित में सारे प्रश्न अव्यवहारिक क्यों होते थे। कैसे कैसे बेतुके से सवाल होते हैं। उन्हें अपने मास्टर जी हाथ में छड़ी लेकर कक्षा में घूमते हुए नज़र आने लगे।

'बताओ, यदि एक नल हज़ार लीटर की टंकी को एक घण्टे में भरता है, उसी टंकी को तीन नल मिलकर कितने समय में भरेंगे?'

ढोलक जी के घर में मात्र एक ही नल था। उसी से बाल्टी भर कर रसोई के, गुसलखाने के, अंदर-बाहर के सारे कार्य निपटाए जाते थे। ढोलक जी को आज तक समझ में नहीं आया कि जहाँ एक नल पहले से लगा है वहाँ दो नल और क्यों लगाए जाएंगे? समझदारी यही होगी कि बाकी दो नल किसी दूसरी जगह लगाए जाएं। पर वह छड़ी के भय से यह कहने की हिम्मत नहीं कर पाए और सवाल हल करने का नाटक करते रहे, जो उनसे अंत तक हल न हुआ।

गणित के मैदान में दोबारा उतरने की सोच कर ही ढोलक जी के हृदय ने धाड़-धाड़ करना शुरू कर दिया। उनका पूरा शरीर पसीने पसीने होने लगा। निहायत ही बकवास विषय था गणित। कहते थे समय बराबर दूरी बटे चाल। पर स्कूल और सिनेमा थिएटर उनके घर से बराबर दूरी होने पर भी स्कूल पहुंचने में अधिक समय लगता था और सिनेमा तक की दूरी फुर्र से तय हो जाती थी। समीकरण धरा का धरा रह जाता था। आज तक उनको यह रहस्य समझ न आया।

अब वही बकवास विषय जो उनके दिमाग में कभी न घुसा, अपने बेटे को पढ़ाना पड़ेगा यह सोच कर ही उनका दिल डूबने लगा। कमज़ोर गणित के कारण ही गृहस्थी का बजट कभी ढंग से बना नहीं पाए, सदा घाटा ही रहता। माह के अंतिम दिनों में घरवाली के सामने हाथ पसारने पड़ते थे या किसी मित्र की शरण लेनी पड़ती थी। इसलिए अभी तो ट्यूशन लगवाने की वे सोच भी नहीं सकते।

किसी तरह हिम्मत करके वे उठे, अब इस विपदा से सामना तो करना ही होगा। उन्होंने पिंटू के कमरे में जाकर उसकी गणित की किताब उठायी और पन्ने पलटने लगे। थोड़ा पहले से ही अध्ययन कर लें तो इज्जत का फालूदा होने बच जाएगा। लेकिन ये क्या...पुस्तक देखकर ही उनका कलेजा मुँह को आने लगा। उन्हें सारे के सारे अंक भैंस बराबर दिख रहे थे। कभी इधर पन्ने पलटे कभी उधर। जिस गणित को उन्होंने सदा के अलविदा कह दिया था, वही काले साये की तरह उनके ऊपर मंडरा रही थी। अब बचने का कोई उपाय न था। अतः कोई चारा न देखकर वे सारी रात गणित लगा रहे थे कि यदि उन्हें हार्ट-अटैक आया, तो दवा-दारू हॉस्पिटल इत्यादि का कितना खर्चा आएगा।

लघुकथा

चढ़ावा

रामेश्वरम तिवारी

परम आदर्शवादी मास्टर धर्मपाल शर्मा जी ने जीवन भर बड़ी ईमानदारी से सरकारी नौकरी की। सरकार ने जब चाहा, जहाँ चाहा, जिस जगह चाहा तबादला किया, बिना हिला-हवाला, ना-नुकुर किए चुपचाप बीबी-बच्चों के साथ बोरिया-बिस्तर उठाया और अगली सुबह, अगली जगह के लिए रवाना हो लिए। जबकि उनके पढ़ाए हुए कुछ स्टूडेंट्स ऊँचे ओहदों पर आसीन थे और कुछ अंत्री-मंत्री बनकर सत्ता का सुख भोग रहे थे।

मास्टर धर्मपाल जीवन भर उसूलों के पक्के, समय के पाबंद और अपने कर्त्तव्य निर्वाह के प्रति बेहद सजग और निष्ठावान रहे, पर जमाने के हिसाब से अपने अधिकारियों और नेताओं को पटाना, चापलूसी और जी-गुज़ारी करना उन्होंने नहीं सीखा। यदि वह चाहते, तो दूसरे सहकर्मियों की तरह सिफ़ारिश के बल पर अपनी पोस्टिंग मनचाही जगह करवा सकते थे। पर उनकी आत्मा ने ऐसा करना कभी गवारा नहीं किया।

प्राचार्य पद से सेवानिवृत्ति पर स्कूल के सहकर्मियों ने बड़े ज़ोर-शोर से विदाई समारोह रखा। उनकी तारीफ़ में कशीदे पढ़े गए। समारोह में ज़िलाधीश से लेकर शिक्षा विभाग के सभी छोटे-बड़े अधिकारी-कर्मचारी से लेकर नगर के गणमान्य नागरिकों को आमंत्रित किया गया। भव्य स्तर पर भोज का आयोजन हुआ। शासन के स्टेंडिंग आदेशानुसार शासकीय सेवक की सेवानिवृत्ति के दिन उसके क्लेम के सारे काग़ज़ात सौंपे जाने चाहिए, पर धर्मपाल जी के प्रकरण में ऐसा कुछ भी नहीं हुआ।

आज उनको सेवानिवृत्त हुए क़रीब साल भर हो चुका है, पर न तो उनकी पेंशन स्वीकृत हुई है और न ही अन्य क्लेम मिले हैं। कल तक जो आदरणीय गुरुजी हुआ करते थे अब बेचारे होकर रह गए हैं। पेंशन कार्यालय के चक्कर लगाते-लगाते उनकी चप्पलें घिस चुकी हैं, पर अनावश्यक आपत्तियाँ लगाई जाकर फ़ाइल को बार-बार लौटाया जा रहा है।

धर्मपाल जी दीन दशा को देखकर कॉलोनी में रहने वाले उनके पुराने स्टूडेंट जोकि आजकल वार्ड का मेम्बर हो गया है। उन पर दया बरसाते हुए मुफ़्त में मशविरा देते हुए बोला- 'गुरु जी ! मेरा कहना मानिए और पल भर के लिए अपने उसूल और ईमानदारी को ताक पर रखकर इंसानी माँस के भूखे भेड़ियों को थोड़ा सा चढ़ावा चढ़ा दीजिए। फिर देखिए; कैसे और कितनी त्वरित गति से आपके सारे काम सुलटते हैं।'

फिल्मी यादों की जुगाली करती 'फ्लैश बैक'

'फ्लैश बैक' की अनुक्रमणिका किसी फिल्म के टाइटल से कम नहीं है, जो पुस्तक में वर्णित विषयों की जानकारी देती है। इसे देखकर सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है, कि यह काम किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा ही किया जा सकता है जो इस माध्यम से इससे जुड़ी विधाओं और इसके वातावरण से किसी न किसी तरह से 'कनेक्ट' हो। 'फ्लैश बैक' न केवल फिल्मी सामग्री पढ़ने वाले पाठकों के लिए किसी मसालेदार सफल फिल्म की तरह पठनीय और दिलचस्प है, बल्कि विधा पर शोध करने वाले छात्रों और आज के फिल्म पत्रकारों के लिए एक संदर्भ पुस्तक के रूप में संग्रहणीय सामग्री का दायित्व भी बखूबी निभाती है।

पुस्तक समीक्षा
अशोक जोशी
लेखक समीक्षक हैं।

लगभग सवा सौ साल पुराने हिंदी फिल्म के इतिहास में अनेकों ऐसे सुनहरी पृष्ठ हैं जिनकी यादें किसी सफल फिल्म में फिल्माए गए फ्लैश बैक की तरह दर्शकों और पाठकों के मन मस्तिष्क की तरह अंकित हैं। जिन्हें वे गाहे बगाहे याद कर अपनी यादों के स्मृति पटल पर समय-समय पर फिल्मों की तरह ही याद करके देखा करते हैं। लेकिन, इन्ही यादों और इतिहास को फ्लैश बैक की तरह याद कर किसी पुस्तक के पृष्ठों के लिए शब्दों से उकेरना हो, तो यह असंभव तो नहीं, फिर भी मुश्किल तो जरूर होता है। क्योंकि, साल दर साल सैकड़ों फिल्में बनाने वाले हिंदी सिनेमा जगत से जुड़ी घटनाओं, फिल्मों और इससे जुड़े प्रसंगों की फेहरिस्त इतनी लम्बी है कि इससे ही पूरी पुस्तक भर सकती है। ऐसे में सवा सौ साल के फिल्मी लेखे-जोखे को शब्द बद्ध करना निश्चित ही एक चुनौतीपूर्ण काम है। लेकिन, इस चुनौती को स्वीकार कर वरिष्ठ पत्रकार, स्तंभकार, लेखक और संपादक हेमंत पाल ने अपनी फिल्मी इतिहास जितने ही लगभग सवा सौ पन्नों में समेटने का काम अपनी पुस्तक 'फ्लैश बैक' में किया है।

'फ्लैश बैक' की अनुक्रमणिका किसी फिल्म के टाइटल से कम नहीं है, जो पुस्तक में वर्णित विषयों की जानकारी देती है। इसे देखकर सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है कि यह काम किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा ही किया जा सकता है जो इस माध्यम से इससे जुड़ी विधाओं और इसके वातावरण से किसी न किसी तरह से 'कनेक्ट' हो। यह संयोग ही है, कि हेमंत पाल इन तमाम शर्तों को बखूबी पूरा करते हैं। देश के एक लोकप्रिय समाचार समूह के लिए फिल्म पत्रकार के दायित्व को निभाते हुए लगभग तीन दशक पूर्व वे मुंबई चले गए थे। वहां सेंट्रल स्टेशन से सटे 'मराठा मंदिर' छबिगृह के एकदम सामने रहते हुए उन्होंने हिन्दी सिनेमा का वह काल देखा है, जिन दिनों दर्शकों में सिनेमा के प्रति जुनून की हद तक दीवानगी थी। वे कई सफल फिल्मों के प्रीमियरों के अलावा कई दिग्गज सिनेकारों से साक्षात्कार करने के साक्षी भी रहे। फिल्म निर्माताओं, निर्देशकों, कलाकारों और संपादकों के सानिध्य में रहकर उन्हें फिल्म निर्माण कला विधा की पूरी जानकारी भी है, जो 'फ्लैश बैक' को ताजा बनाए रखकर प्रस्तुत करने में मददगार रही है।

समझा जाता है कि फिल्मों पर लिखना बहुत मुश्किल नहीं है, लेकिन ये भ्रम है। क्योंकि, किसी एक प्रसंग पर कैसे इतिहास खंगालकर वर्तमान तक उसे टटोला जाता है, यही इस किताब की विशेषता है। लिखे गए ढेर सारे आलेखों में से उंगली पर गिनकर चुने गए आलेखों को सामयिक दृष्टि से पठनीय और प्रासंगिक बनाए रखना उससे कहीं ज्यादा मुश्किल है। यह अच्छी बात है कि 'फ्लैश बैक' इन सभी कसौटियां पर खरी उतरती है। यही कारण है कि 'फ्लैश बैक' न केवल फिल्मी सामग्री पढ़ने वाले पाठकों के लिए किसी मसालेदार सफल फिल्म की तरह पठनीय और दिलचस्प है, बल्कि विधा पर शोध करने वाले छात्रों और आज के फिल्म पत्रकारों के लिए एक संदर्भ पुस्तक के रूप में संग्रहणीय सामग्री का दायित्व भी बखूबी निभाती है। 'फ्लैश बैक' में उन आलेखों को सम्पादित कर सम्मिलित किया गया है, जो न केवल गुजरे जमाने के दर्शकों और पाठकों को फ्लैश बैक में ले जाने का काम करती है, बल्कि आज के जमाने के पाठकों को भी हैरत अंगेज सामग्री प्रदान करती है जो उन्हें यह बताने में कामयाब होगी कि हिन्दी सिनेमा का जो मौजूदा स्वरूप है उसे वहां तक पहुंचने से पहले किन-किन पड़ाव से गुजरना पड़ा है।

फ्लैश बैक की शुरुआत पहली सवाक फिल्म 'आलम आरा' से करते हुए यह रोचक जानकारी पेश करती है, कि पहले का सिनेमा आज से ज्यादा संगीतमय था जिसमें एक ही फिल्म में 69 गानों को सुंदरता के साथ फिल्म की कहानी के साथ पिरोया गया था। इसमें इस बात का जिक्र है कि किसी फिल्म में इंटरवल तक नहीं होते थे। वो कौन सी फिल्में हैं, जो एक से ज्यादा मध्यांतर के साथ प्रदर्शित की गई थी। इसमें फिल्मों के बनने और डिब्बों में बंद रहने की दास्तान भी शामिल है, तो परदे से परे असल जिंदगी में बीमारियों से जूझने वाले सितारों का भी बकायदा डायग्नोसिस किया गया है।

एक सफल लेखक की सफलता का मूल मंत्र यही होता है कि उसे पाठकों की नब्ज की पहचान होती है। जिस तरह कोई सफल फिल्मकार फिल्म की सफलता के टोटके और नुस्खों का इस्तेमाल करना नहीं भूलता, उसी तरह हेमंत पाल यह नहीं भूले कि फिल्मी दर्शकों और पाठकों को क्या देखना और पढ़ना पसंद है। यही कारण है कि 'फ्लैश बैक' में मनोरंजन में भी अपराध सबकी पसंद जैसे आलेख को किसी सस्पेंस या क्राइम फिल्म की तरह रोचक अंदाज में पेश किया गया है। यह किताब बैक एक तरफ जहां गीत-गजल, प्यार-मोहब्बत, चिट्ठी-पत्री और आंसुओं से लेकर हंटर तक की बात करती है, तो दूसरी तरफ फिल्मी बजट, तीज त्यौहारों, असल घटनाओं और आपदा से जुड़ी फिल्मों की याद भी दिलाती है। इसमें बार-बार अपनाए गए टोटकों और फिल्मी मसालों का हवाला दिया गया है, तो इस और भी ध्यान आकर्षित किया गया है कि क्यों 'पानी' जैसे संवेदनशील विषय अभी तक फिल्मकारों की नजरों से ओझल है।

जब दर्शकों को डरावनी फिल्मों से डराया जाता था। आज जब दर्शको को हॉरर-कामेडी से डर के बीच बीच में गुदगुदाया जाता है, उसे भी 'फ्लैश बैक'ह्य सामने रखती है। जिस तरह आज सिनेमा और टीवी की संकर किस्म ओटीटी ने सिनेमा देखने और समझने का वातावरण बदला है, उसे भी फ्लैश बैक में शामिल कर पुस्तक को अद्यतन बनाने का प्रयास किया गया है। आज जब फिल्में ही चलने के लिए संघर्ष कर रही हों, फिल्मों पर पुस्तक लिखना और उसे पाठकों के हाथों किफायती दाम पर पहुंचाना एक भागीरथी कार्य है। शायद इसीलिए इसे पाठकों की जेब का ख्याल रखते हुए ज्यादा बनावटी आवरण पहनाने के सीधे और सरल तरीके से मुद्रित करने का प्रयास किया गया। इसमें प्रकाशित श्वेत श्याम चित्र भले ही पुस्तक को किफायती बनाने में योगदान करते हों, लेकिन यदि गंभीरता से सोचा जाए तो याद आता है कि फ्लैश बैक आज की तरह रंगीन नहीं बल्कि कल की तरह श्वेत श्याम ही होता है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।
प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रकाश के उत्सव में जगमग है संसार

कला

पंकज तिवारी
कला समीक्षक

दीपावली पर्व खुशियों का पर्व है। जगमग करते घर, आँगन, गाँव और देश का पर्व है। साल भर उदासीन रहने वाले मन को भी चैतन्य कर देने का पर्व है। कालिख में भी जगमगाहट को उतार देने का पर्व है।

दीपावली में कला एवं सौंदर्य की छटा देखते ही बनती है। विशेष व्रत एवं तप के महीने कार्तिक में पड़ने वाले पर्व दीपावली में बचपन, पचपन एवं वृद्धावस्था सभी की सक्रिय भूमिका होती है, पहले तो और भी होती थी। हम यहाँ आज कला एवं सौंदर्य के परिप्रेक्ष्य में ही दीपावली की बात करेंगे जहाँ पहले और आज में हुए तमाम परिवर्तनों पर भी बात होगी। दीपावली में कला की उपस्थिति पर बात होगी।

सुबह सूर्य के सुनहरे प्रकाश के साथ शुरू होता दिन दीपावली के वजह से कुछ विशेष बन जाता है, पहले तो और भी विशेष बन जाता था। आज हम जो कुछ भूल रहे हैं उसी को पकड़ने का प्रयास करेंगे। दादा दादी घरों की शान हुआ करते थे उनके आशीर्वाद के साथ ही दिन की शुरुआत होती थी। ठंड कड़कड़ाती तो नहीं पर हाँ सेहलावन वाली जरूर थी, मनभावन थी। खेतों में गोबर खाद मिला चुकने के बाद आलू की मेड़ी चढ़ने का काम भी जोरो पर होता था। खाली कैनवास पर चित्र संसार रचने से पहले की जो तैयारी होती है कुछ ऐसे ही खेतों को भी तैयार किया जाने लगता था। कहीं-कहीं आलू, मूली, धनिया, लहसुन की खेती हो भी चुकी होती थी जिसकी मेड़ी किसी ग्रैफिक डिजाइन के मानिंद आंखों को सोहाती है। लहलहाती फसलें किसी पेंटिंग से कमतर थोड़ी न है। कलाकार विंसेंट वॉनगॉग अनायास ही याद हो आ रहे हैं फर्क बस काले कोयले और यहां सुनहरे मिट्टी का है। खेतों में लगातार अपने काम में लगे लोग कैनवास पर फिसलते रंगों की भांति नजर आ रहे हैं। कहीं नीला दक्षिण को तो कहीं पीला पूरब को फिसलता नजर आ रहा है। जहां उनके कार्य, उपस्थिति और रंगों के अनुरूप परिप्रेक्ष्य भी नजर आ ही जाता है। देवी श्री लक्ष्मी भारतीय कला में सौन्दर्य की अधिष्ठात्री देवी के रूप में मान्य हैं जिनके पूजन का विधान भी कला से ही जुड़ा हुआ है और दीपावली में उन्हीं की पूजा भी होती है।

दादी महीनों पहले से ही बखरी पर रंग-रोगन के कामों में लग जाती थी, पिड़ोर से गंउखा तथा डेहरियों के आसपास का क्षेत्र सजा दिया जाता था। घर के लोग विशेषतः महिलाएं ब्रश या बांस के कैनी को कूंच कर या अपने अंगुलियों से ही लोक रिवाजों को परिभाषित करते चित्र बनाने में लग जाती थीं। साल भर से स्मृतियों में सजे स्वप्न को दीवारों पर आकार मिलता था जिसको देखने भर से मन के सारे ग़म काफूर हो जाते थे। गांव कलाकृतियों वाला गांव नजर आने लगता था। इस बार भी जगमगाहट से मन प्रफुल्लित हो उठा है, आंखें चमक उठी हैं। रंग जैसे हवा में तैर रहे हों और सुगंध सीधे नथूनों में प्रवेश कर जा रही हो।

घर का निर्माण वास्तु के आधार पर होता था जहां रंगों का विधान भी कला के अंतर्गत ही निहित सा जान पड़ता था। चारों तरफ महकते फूलों की खुश्बू फैली हुई होती थी। सिंदूरी रंग से फैली छटाओं के बीच दीवारों और पेड़ पौधों पर पसरे रंग और फैले महक को देख और सूंघ कर मन किसी अनंत यात्रा पर निकल जाता था। सफेद और गेरुआ रंग

का बोलबाला होता था। कच्ची बखरी में लगे गोबरी के लेप पर रंग-रोगन किसी विशेष कलाकारी से कम नहीं होती थी। अप्रशिक्षित कलाकारों की कृतियां भी प्रशिक्षित कलाकारों पर भारी होती थीं।

दादा अपने ही दुनिया में मगन रहा करते थे उनके दुनिया में भी साफ-सफाई ही रहा करती थी पर वो बखरी से बाहर मसलन गोरुवार, दलान, चबुतरा, बगइचा, चन्नी वाली दुनिया होती थी जिसमें भर दीवाली दादा मशगूल हो जाया करते थे। गाय, भैंस और बैलों को खूब रगड़ कर नहलाने के बाद उनके सींगों पर काले रंग लगा कर सुनहरे धूप में बांध दिया करते थे।

पेड़ पौधों पर भी रंग लगाया जाता था। बच्चे पूरे मन से मिट्टी के मंदिर बनाने में लग जाया करते थे। एक दूसरे में होड़ सी लगी होती थी। मंदिरों को अलग-अलग रंगों में रंगा जाता था हालांकि मिट्टी में सने होने से रंग खुलकर तो नहीं आ पाते थे पर लगते खूबसूरत थे। दोपहर होते ही नोखई चाचा मिट्टी के दियली, सुग्गा, जतोला, घंटी लिए आ पहुंचते थे, बच्चे पूरे मन से उनके इंतजार में रहते थे। साइकिल की घंटी बजते ही बच्चों की भीड़ टूट पड़ती थी। चारो तरफ से उनको घेर लिया जाता था। सभी घरों में दियली और खिलौने बांटने के बाद खूब सारे पैसों और धान, गेहूं के साथ खुशी-खुशी मन से चाचा अपने घर चले जाते थे सभी घरों में खुशियां बांटकर। अब तो खैर जांत-जंतोला सपने सरीखे हो चुके हैं पर दियली अभी भी है, बिजली के झालरों ने खैर लंगड़ी मारने का काम तो किया ही है।

मम्मी चाची घर के भीतर की सफाई के साथ ही मिट्टी के सभी बर्तनों और खिलौनों को पानी में डुबोकर रख देतीं थी ताकि ज्यादा तेल ना सोखने पाये। शाम होते ही सभी एक बार फिर अपने-अपने कामों में लग जाया करते थे। बखरी के बीच बड़े से आंगन में बड़े से परात में सजी दियलियों को लिए दादी बैठ जाती थीं। देशी घी से दिया जलाते हुए एक थाली में दादा जी को देते हुए खेत, खरिहान, घूर, मशीन आदि पर जलाने को कहती थीं। दादा थाली लिए बाहर चले जाते थे। गोलू, भोलू, शैली, सविता दादी को घेरे अपने बारी का इंतजार करते रहते थे। एक-एक, दो-दो दिये सभी दरवाजों पर रखने का काम इन बच्चों को ही मिलता था। हर घरों से लोग सज संवर कर निकलते थे, हंसते बतियाते दीया सजाते आगे बढ़ते चले जाते थे। हर घर से एक दीया मंदिर के लिए हजारों दीये बन जाते थे। सड़क, खेत, खरिहान, मंदिर, गाँव, घर कहीं भी अंधेरा नहीं रह जाता था। जगमग रौशनी में नहायी धरा खुद पर इतराने लगती थी।

सौंदर्यबोध आसमान पर होता था। मजाल कि कहीं अंधेरा छूट जाय काश कि ऐसे ही मन का अंधेरा भी जगमग हो उठे। टिमटिमाते रोशनी में एक दूसरे के चेहरों को देखना कितना सुखकर प्रतीत होता था। घरों में घंटों पूजा होती थी। ऐसी मान्यता है कि देवी देवता सभी घरों में जाते हैं इसलिए दरवाजे खुले रखे जाते थें। भगवान को प्रसाद चढ़ाने के बाद प्रेम बांटने का दौर शुरू होता था। लोग फल, फूल, प्रसाद लिए अपने अगल-बगल के घरों में जाते थे और खूब सारा प्रेम बांटकर आते थे। माहौल सुकून से भर जाता था। बच्चे पटाखों के साथ खेलते और घर में बने पकवानों को खाते हुए सो जाते थे, सभी सो जाते थे। सुबह बच्चों में जल्दी उठने की होड़ थी। जो जल्दी उठता था रात को जली सभी दियलियां बीन लाता था उसमें छिद्र कर गड़ारी बनाया जाता था जो आने वाले कुछ दिनों तक उनके खेलने और खुश रहने का साधन हुआ करता था। दादा-दादी इस बदलाव को देखकर अपने संपन्नता पर कम बल्कि अपने भरे-पूरे परिवार के संपन्नता पर ज्यादा लहालोट होते थे। घर को सजाने में थोड़ा बहुत ही सही सभी का हाथ होता था। अभी भी है पर पहले से कुछ कम है। लोग समय को महत्व देने लगे हैं रिश्ते दरकिनार होते जा रहे हैं पर इस दिन में अभी भी वो शक्ति है कि लोगों को जोड़ सके। दीपावली दिलों को जोड़ने का त्योहार है। दीपावली में घर के साथ ही परिवार और परिवार के मन के मैल भी साफ हो जाते हैं। अब तो बच्चे मोबाइल में ही सब कुछ खेल लेना चाहते हैं बाहर निकलते हैं तो बस पटाखे फोड़ने के मन से।

मिट्टी के गौरा-गौरी सुवा नृत्य दीपावली के मूल में है। दीप, कलश, पेड़-पौधे, घर, हर जगह सौंदर्य का उत्सव बस दीपावली में ही देखा जा सकता है। शाम को जब हर घर से दीप सज-संवर कर निकलता है धरा रौशनी से नहा उठती है और खुशी से विह्वल हो जाता है हर घर और मन। दरवाजे खोल दिए जाते हैं ताकि चारों तरफ से प्रवेश कर सके खुशियां और प्रकाश आगमन हो सके माँ लक्ष्मी का। दीपावली के मूल में है कला और सौंदर्य।

प्रकृति एवं मनुष्यों के आपसी मेलभाव को दर्शाता ये महीना बहुत कुछ सिखा जाता है हम सभी को। राजा राम के अयोध्या वापसी और अयोध्यावासियों के खुशियों के गुबार से भी संबंधित है ये पर्व। घुप्प अंधेरी रात में भी जगमग दीपों से नहायी अयोध्या सोचकर ही मन कमल सा खिल उठता है।

असत्य पर सत्य के, तम पर प्रकाश के विजय को भी दर्शाता है पर्व दीपावली यानी दीपों की पंक्तियाँ। जगमग होता घर संसार। वर्ष भर से दबी पड़ी इच्छाओं का अचानक से खुल जाना, घनघोर, सघन अंधेरी रातों को भी प्रकाश-प्रकाश कर देना, कलुषित मन को पवित्र कर के रिश्तों में मिठास भर देना ये सब दीपावली के ही बस की बात है।

भाषा परिधान भले ही भिन्न हों पर उद्देश्य सभी का एक ही होता है, पूजा, सुकून और खुशियों का फैलाव। जीवन विभिन्न रंगों का संगम है जहाँ प्रमुख चाहतों में खुशियाँ हैं। दीपावली खुशियों का त्योहार है, दीपावली रंग-बिरंगे वातावरण का त्योहार है, दीपावली खुशियों को खुलकर एक दूसरे से बांटने का त्योहार है। अंधकार पर प्रकाश की, असत्य पर सत्य की, अधर्म पर धर्म की जीत है दीपावली। दीपावली में कला का भरा-पूरा संसार समाया हुआ है। रंग खेती-बाड़ी,दीवार, हवाओं और लोगों के मन तक को रंग जाता है। दीपावली के साथ ही रंगों से सजी एक नई दुनिया सभी के समक्ष प्रस्तुत हो जाती है जो कई महीनों तक अपने होने का एहसास कराती है, एहसास जैसे ही धीरे-धीरे धूमिल होने लगता है कि फिर आ धमकती है अगले वर्ष की दीपावली

मिठाइयों में चांदी की जगह एल्यूमिनियम की परत

मिलावटी त्यौहार
डॉ. रामानुज पाठक

भारत त्योहारों का देश है – यहाँ हर मौसम, हर संबंध और हर भाव के लिए एक उत्सव है। दीपावली की दीपशिखा, रक्षाबंधन की राखी, ईद की सेवई, होली की गुजिया – सबमें एक साझा तत्व है मिठास। परंतु जब इसी मिठास में मिलावट घुल जाए, तो उत्सव का सार ही बदल जाता है। आज जब त्योहारों की सजावट में 'चांदी की वर्क' की जगह एल्यूमिनियम की परतें इस्तेमाल की जा रही हैं, तब यह केवल एक खाद्य मिलावट नहीं बल्कि हमारी सामाजिक चेतना की गिरावट का प्रतीक भी बन चुका है।

प्राचीन भारत में मिठाइयों पर चांदी की वर्क लगाने की परंपरा रही है। आयुर्वेद के ग्रंथों में भी चांदी को शुद्ध, शीतल और रोगाणुरोधी धातु बताया गया है। पारंपरिक रूप से शुद्ध चांदी को बकरी या भेड़ की खाल के बीच रखकर हथौड़े से कूटा जाता था, जिससे उसकी अत्यंत पतली परत तैयार होती थी। यह प्रक्रिया श्रमसाध्य जरूर थी, लेकिन उसमें शुद्धता और नैतिकता दोनों निहित थीं।

अब यह परंपरा मशीनों और बाजार की गति से चलने लगी है। चांदी महंगी धातु है, इसलिए मिलावटखोरों ने इसका सस्ता विकल्प – एल्यूमिनियम फॉइल – ढूंढ लिया है। बाहरी चमक में दोनों का फर्क आम उपभोक्ता को शायद ही दिखे, लेकिन स्वास्थ्य और रासायनिक दृष्टि से यह अंतर भयावह है।

चांदी (Silver – Ag) एक निष्क्रिय/कम क्रियाशील धातु है, जो शरीर में अवशोषित नहीं होती और किसी भी जैव-रासायनिक क्रिया में भाग नहीं लेती। यह विषैला नहीं है, इसीलिए इसके सूक्ष्म प्रयोग (जैसे एंटीसेप्टिक बैंडेज, आयुर्वेदिक भस्म आदि) सुरक्षित माने जाते हैं।

इसके विपरीत, एल्यूमिनियम (Al) एक सक्रिय धातु है, जो पेट के अम्ल (एससीएल) से प्रतिक्रिया कर एल्यूमिनियम क्लोराइड बनाती है – यह यौगिक शरीर के लिए हानिकारक है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इसके दुष्प्रभाव अनेक हैं।

एल्यूमिनियम तंत्रिका कोशिकाओं में जमा होकर न्यूरोटॉक्सिसिटी उत्पन्न करता है।

यह ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस बढ़ाता है जिससे मस्तिष्क की कोशिकाएँ क्षतिग्रस्त होती हैं।

दीर्घकालिक सेवन से अल्ज़ाइमर रोग, स्मृति-क्षय और न्यूरोडीजेनेरेटिव विकार हो सकते हैं।

एल्यूमिनियम गुर्दे और यकृत पर अतिरिक्त दबाव डालता है तथा बच्चों की तंत्रिका प्रणाली को प्रभावित करता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, मानव शरीर के लिए सुरक्षित एल्यूमिनियम सेवन की मात्रा 2 मिलीग्राम प्रति किलोग्राम शरीर भार प्रति सप्ताह से अधिक नहीं होनी चाहिए। परंतु नकली वर्क के बार-बार सेवन से यह सीमा कई गुना पार हो जाती है।

भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण ने स्पष्ट दिशा-निर्देश जारी किए हैं कि मिठाइयों पर केवल 99.9 प्रतिशत शुद्ध चांदी की वर्क ही लगाई जा सकती है। यह वर्क किसी भी प्रकार के प्लास्टिक, पेपर या धातु मिश्रण से तैयार नहीं होनी चाहिए।

परंतु जांच रिपोर्टें बताती हैं कि बाजार में बिकने वाली लगभग 70 प्रतिशत वर्क एल्यूमिनियम-आधारित होती हैं। कुछ व्यापारी टिन (एसएन) और चांदी का मिश्रण भी इस्तेमाल करते हैं, जिससे न केवल स्वास्थ्य को नुकसान होता है, बल्कि उपभोक्ता को ठगा भी जाता है।

त्योहारों के दौरान जब मिठाइयों की मांग अचानक बढ़ जाती है, तो दुकानदार लागत घटाने के लिए सस्ती एल्यूमिनियम वर्क का उपयोग करने लगते हैं। यही वह बिंदु है जहाँ लालच विज्ञान पर भारी पड़ जाता है।

आम उपभोक्ता के लिए दोनों में फर्क समझना कठिन है, पर कुछ सरल परीक्षण मदद कर सकते हैं।असली चांदी की वर्क और एल्यूमिनियम की वर्क में अंतर पहचानने के लिए कुछ सरल परीक्षण विधियाँ अपनाई जा सकती हैं। असली चांदी की वर्क की चमक हल्की सफेद और प्राकृतिक धात्विक होती है, जबकि नकली एल्यूमिनियम की वर्क नीली या अत्यधिक चमकीली झिलमिलाहट लिए होती है। स्पर्श करने पर असली वर्क बहुत पतली होती है और उंगलियों पर नहीं चिपकती, जबकि एल्यूमिनियम की वर्क थोड़ी मोटी होती है और हाथों पर पाउडर जैसा अंश छोड़ती है। ज्वाला परीक्षण में असली चांदी की वर्क काला अवशेष छोड़ती है, जबकि एल्यूमिनियम की वर्क सफेद धूल या राख में बदल जाती है। सावधानीपूर्वक स्वाद परीक्षण करने पर असली चांदी स्वादहीन होती है, जबकि एल्यूमिनियम की वर्क हल्का धात्विक स्वाद छोड़ती है, जिससे उसकी नकली पहचान स्पष्ट हो जाती है।

सर्वोत्तम उपाय यह है कि मिठाइयाँ 'एफएसएसएआई प्रमाणित दुकानों' से ही खरीदी जाएँ, और पैकिंग पर वर्क का उल्लेख अवश्य जाँचा जाए।

यह केवल स्वास्थ्य का नहीं, बल्कि नैतिकता का भी प्रश्न है। जब व्यापारी मिठास में मिलावट करता है, तो वह केवल उपभोक्ता को नहीं, बल्कि समाज के विश्वास को भी विषाक्त करता है। त्योहारों की आत्मा 'श्रद्धा और पवित्रता' पर टिकी है – यदि उसमें छल और धोखा मिल जाए, तो उत्सव का अर्थ ही खो जाता है।

आज यह समस्या केवल मिठाई तक सीमित नहीं रही; यह मानसिकता हर क्षेत्र में दिखती है – शिक्षा से लेकर व्यापार तक, सच्चाई की जगह दिखावे ने ले ली है। यही कारण है कि 'चमक' आज 'मूल्य' से बड़ी प्रतीत होती है।

त्यौहारों में फूड टेस्टिंग ड्राइव का कठोरता से पालन सुनिश्चित किया जाना चाहिए। राज्य स्तरीय प्रयोगशालाओं में त्योहारों से पहले मिठाइयों की रैंडम जांच अनिवार्य की जानी चाहिए।

खाद्य निरीक्षकों को त्वरित परीक्षण किट उपलब्ध कराए जाएँ जिनसे वर्क की धातु पहचान संभव हो सके।

शिक्षण संस्थानों में अभियान चलाकर विद्यार्थियों को 'खाद्य सुरक्षा' विषय पर जागरूक किया जाए ताकि वे स्वयं और अपने परिवार को सतर्क रख सकें।

मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है।टीवी, रेडियो और सोशल मीडिया पर 'मिलावट मुक्त त्योहार' जैसे अभियान चलाकर उपभोक्ताओं को जानकारी दी जाए।

दुकानदारों को हर त्योहार के पहले 'शुद्ध वर्क उपयोग' का प्रमाणपत्र अर्थात् सत्यापन प्रमाणपत्र प्रदर्शित करना अनिवार्य किया जाए।

एल्यूमिनियम या अन्य धातु वर्क पाए जाने पर दंडात्मक प्रावधान हों मिलावट खोरों के विरुद्ध कठोर दंड, जुर्माना और लाइसेंस रद्द करने की नीति लागू हो।

चांदी की जगह प्राकृतिक विकल्प जैसे केसर, सूखे मेवे, पिस्ता, नारियल, गुलकंद या खाद्य रंग उपयोग किए जा सकते हैं। ये न केवल सुरक्षित हैं बल्कि स्वाद और पौष्टिकता भी बढ़ाते हैं।

विज्ञान हमें बाहरी शुद्धता की चेतावनी देता है, पर संस्कृति हमें आंतरिक शुद्धता की सीख देती है। जब दोनों का समन्वय होगा, तभी उत्सव का अर्थ पूर्ण होगा। असली त्योहार वही है जिसमें स्वाद से अधिक सच्चाई हो, चमक से अधिक विश्वास हो, और दिखावे से अधिक भावनाएँ हों।

'सच्चाई की मिठास ही असली प्रसाद' होती है।

त्योहारों की यह भूमि, जिसने हमें 'सत्यमेव जयते' का मंत्र दिया, आज हमसे यही आग्रह करती है –

दरअसल सजावट में नहीं, सच्चाई में सौंदर्य खोजने की आवश्यकता है।

हमारे उत्सव तभी पवित्र बनेंगे जब हम यह समझेंगे कि मिठास किसी धातु की चमक में नहीं, बल्कि हमारे व्यवहार, ईमानदारी और वैज्ञानिक चेतना में निहित है।

यदि हम सजग उपभोक्ता बनें, वैज्ञानिक दृष्टि अपनाएँ और नैतिक मूल्य पुनर्स्थापित करें, तो निश्चित ही वह दिन दूर नहीं जब हर मिठाई की चमक सच्ची होगी, हर त्योहार की रोशनी निर्मल होगी।

'मिलावट से मुक्त त्योहार ही सच्चे आनंद का प्रतीक हैं।

चमक चुराई जा सकती है, पर सच्चाई नहीं।'

तह में जाकर तफ्तीश करती अपराध कथा

वेब सीरीज समीक्षा
आदित्य दुबे
लेखक वेबसाइट ई– अन्तर्भव के प्रबंध संचालक हैं ।

एक अच्छी कहानी,बेहतर पटकथा और कुशल अभिनेताओं के दमदार अभिनय से वेबसिरीज़ - 'सर्च,द' नैना' इन दिनों दर्शकों की पहली पसन्द बना हुई है । अपनी इन्हीं खूबियों के कारण यह सिरीज़ दर्शकों को बाँधे रखने में सफल है और सिरीज़ का हर दृश्य उनकी उत्सुकता को बढ़ाने वाला है । वेबसिरीज़ की एक खास बात यह भी है कि इससे हर उम्र का दर्शक वर्ग जुड़ाव महसूस करेगा। एक माँ जो कैरियर और घर के बीच अपने कैरियर को ज्यादा महत्व देती है और फिर उसे पछतावा भी होता है कि वह अपनी बेटी और पति को समय नहीं दे पा रही है। दूसरी ओर पॉलीटिक्स का ऐसे मर्डर केस से जुड़ना भारत में काफी आम है। यानी एक हाईप्रोफाइल केस होने के बावजूद कैसे एक पॉलीटिशियन की लाइफ पर ज्यादा असर नहीं पड़ता और उसे बस चुनाव में अपनी जीत की पड़ी है।

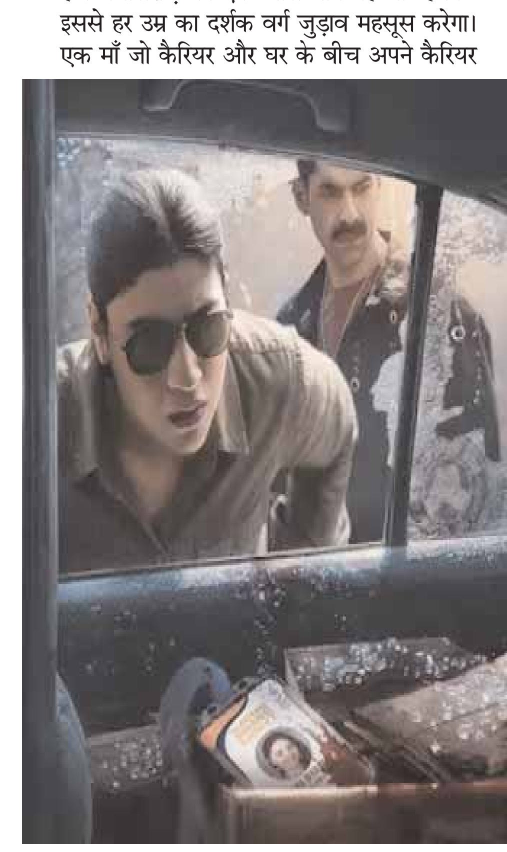

कहानी में कोंकणा सेन शर्मा ने एसीपी संयुक्ता दास की भूमिका निभाई है जो अपने कैरियर के कारण परिवार के साथ वक्त नहीं बिता बाती और इसीलिए वह सब कुछ छोड़कर अपनी परिवार के साथ अहमदाबाद जाने का फैसला करती है। इतना ही नहीं वह क्राइम ब्रांच को छोड़कर साइबर सेल जॉइन करने वाली हैं। हालांकि उनके जाने से पहले ही शहर में एक लड़की जिसका नाम नैना है, उसकी बॉडी पानी में डूबी हुई एक कार में मिलती है। एक अच्छी ऑफिसर होने के नाते सीनियर उन्हें इस केस की पड़ताल करने के लिए कुछ दिन रुकने को कहते हैं जिसमें उन्हीं की जगह आए नए एसीपी (सूर्या शर्मा) उनके साथ इस केस में मिस्ट्री सुलझाने की कोशिश करते हैं। इस रहस्य की गुत्थी सुलझाने के आसपास ही बुनी गई है इस सिरीज़ की कहानी ।

इस वेबसिरीज़ की सबसे प्रमुख विशेषता यह है इसमें कहानी के कहने का तरीका बेहद रोचक है और जिस ऐक्टर या एक्ट्रेस को जो भूमिका दी गई है उसमें उन्होंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया है । आप कहानी और विभिन्न चरित्रों के साथ इतना तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं कि एपीसोड दर एपीसोड उससे जुड़ते चले जाते हैं और एक एपीसोड देखने के बाद अगला एपिसोड देखे बिना नहीं रह पाते हैं। एक मर्डर मिस्ट्री की मजबूत कड़ी भी यही होती है कि यह दर्शकों को बोर ना करे और सस्पेंस के साथ आगे बढ़े जो काम रोहन सिप्पी ने इस सिरीज़ में अच्छे से किया है।

इस वेबसिरीज में अभिनय के बारे में हमने शुरुआत में ही प्रशंसा की है। सभी कलाकारों ने बढ़िया अभिनय किया है । कोंकणा सेन शर्मा ने एसीपी की भूमिका में सधी हुई एक्टिंग की है और घर और कैरियर के बीच पिसने वाली महिला के चरित्र को उन्होंने बखूबी निभाया है। वेबसिरीज में उनके चरित्र के माध्यम से समाज में मौजूद पितृसत्तात्मक सोच पर भी प्रहार किया गया है। अत्यंत प्रतिभाशाली होते हुए भी एक भारतीय स्त्री अपने केरियर को छोड़कर घर को प्राथमिकता देने का निर्णय लेती है इस बात को सिरीज़ में अच्छे से प्रस्तुत किया है ।

इस पूरी सिरीज में एक अपराध कथा के तह में जाकर तपतीश में साइबर क्राइम का भी एक बड़ा कोण सामने आता है जो इसे आज की युवा पीढ़ी और उनके तौर तरीकों, उनकी जागरुकता और साइबर अपराध से के मुद्दों को उजागर करता है। राजनीति, समाज, परिवार और साइबर क्राइम और इन सबके बीच पुलिस कैसे इस केस को सॉल्व करने की कोशिश करती है यही इसकी कहानी को बाँधने का काम करता है। अपराध रहस्य कथाओं को पसन्द करने वाले इस वेबसिरीज को जरूर देखें, जिन्हें सस्पेंस थ्रिलर पसन्द है वह भी इसे एंजॉय कर सकते हैं क्योंकि यह आपको बोर तो बिल्कुल भी नहीं करेगी।

नगरीय विकास के लिए तैयार हो रही ठोस कार्ययोजना

रोडमैप से तय होगी शहर के विकास की दिशा

बैतूल। शहर के विकास की दिशा बदलने के लिए नगरपालिका रोडमैप तैयार कर रही है। इस रोडमैप के तहत शहरों में जल आपूर्ति, स्वच्छता, सडक़ और प्रकाश व्यवस्था, नाली-सीवरेज, स्वास्थ्य सेवाएं, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और अन्य नागरिक सुविधाओं के सुधार और विस्तार की स्पष्ट रूपरेखा होगी। दरअसल प्रदेश के नगरीय निकायों में विकास कार्यों की योजना और प्राथमिकता तय करने तीन वर्षीय रोडमैप तैयार किया जाएगा, जो आगामी वर्षों में शहर की तस्वीर बदलने में भूमिका निभाएगा। नगरीय प्रशासन एवं विकास संचालनालय द्वारा सभी नगरपालिकाओं और नगर परिषदों को निर्देश जारी किया गया है कि वे अपने क्षेत्र की आवश्यकताओं और मौजूदा स्थिति का आंकलन करते हुए 2025-2028 तक की मूलभूत सुविधाओं की कार्ययोजना प्रस्तुत करें। संचालनालय ने स्पष्ट किया है कि रोडमैप निर्धारित समय-सीमा में प्रस्तुत करना प्रत्येक निकाय की जिमेदारी होगी। इसके अनुपालन में देरी करने वाले अधिकारियों की जवाबदेही तय की जाएगी।

योजनाबद्ध तैयारी से बदलेगी शहर की सूरत

योजनाबद्ध तैयारी से न केवल नगरीय विकास में तेजी आएगी, बल्कि शहर की भविष्य की सूरत भी सकारात्मक और स्थायी रूप से बदल पाएगी। विशेषज्ञों का मानना है कि यह रोडमैप शहरों में विकास की दिशा निर्धारित करने के साथ-साथ नागरिकों की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को प्राथमिकता देने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनेगा। जल, सडक़ और स्वच्छता में सुधार आयेगा। नगरपालिका अधिकारियों के मुताबिक यह केवल कागजी योजना नहीं रहेगी, बल्कि इसके माध्यम से विकास को प्राथमिकता में कार्यान्वित करेंगे। जिससे आगामी दिनों शहर के विकास को रफ्तार मिलेगी और शहर की सूरत स्थायी रूप से बदल जायेगी।

विकास के लिए तैयार होगा दीर्घकालिक आधार

नगरीय विकास के लिए एक ठोस और दीर्घकालिक आधार तैयार करेगी। आगामी वर्षों में शहर की सूरत बदलने में यह रोडमैप एक निर्णायक उपकरण साबित होगा और संसाधनों का बेहतर आवंटन सुनिश्चित होने के साथ-साथ योजनाओं के क्रियान्वयन में पारदर्शिता और गति भी आएगी। स्थानीय अधिकारियों का कहना है कि रोडमैप के माध्यम से नगरों की विकास प्राथमिकताओं को स्पष्ट किया जा सकेगा और इसके आधार पर बजट आवंटन, परियोजनाओं की समयबद्ध कार्यान्वयन और नागरिकों की सुविधा सुनिश्चित की जा सकेगी। हर कार्य के अपेक्षित लाभ और परिणाम संकेतक, साथ ही संभावित बाधाओं और समाधान के उपाय भी शामिल होंगे।

रोडमैप में सुविधाओं की आवश्यकता को करे चिन्हित

संचालनालय ने सभी निकायों को निर्देश दिया है कि वे अपने रोडमैप में वर्तमान अवस्थिति का विवरण दें, जिन क्षेत्रों में सुविधाओं की अधिक आवश्यकता है उन्हें चिन्हित करें, और आगामी तीन वर्षों में वित्तीय वर्षवार कार्यों का विवरण तैयार करें। इसके अलावा, संभावित लागत और वित्तीय स्त्रोतों जैसे कि निकाय निधि, राज्य सरकार, सीएसआर और पीपीपी मॉडल को भी स्पष्ट किया जाना आवश्यक है। इससे नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार, सार्वजनिक सेवाओं की गुणवत्ता में वृद्धि और शहरी इंफ्रास्ट्रक्चर के समग्र विकास को बढ़ावा मिलेगा।

इनका कहना है –

नगरीय प्रशासन एवं विकास भोपाल के आयुक्त ने निकायों को अगले तीन वर्ष की मूलभूत सुविधाओं का रोडमैप तैयार करने के निर्देश दिए हैं। रोडमैप बनाने का काम चल रहा है। जल्द ही रोडमैप तैयार कर शासन को प्रस्तुत कर दिया जाएगा।

– नीरज धुर्वे, एई नगरपालिका बैतूल

शासकीय आयुर्वेदिक औषधालय में मनाई धन्वंतरि जयंती

नि :शुल्क स्वास्थ्य शिविर का हुआ आयोजन

बैतूल। शासकीय आयुर्वेदिक औषधालय गर्ग कॉलोनी में 18 अक्टूबर को भगवान धन्वंतरि जयंती बड़े श्रद्धा भाव और उत्साह के साथ मनाई गई। इस अवसर पर निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

किया गया। कार्यक्रम में आयुर्वेद के प्रति जनजागरूकता और श्रद्धा का अद्भुत संगम देखने को मिला। कार्यक्रम में जिला आयुष अधिकारी डॉ. योगेश चौकीकर, डॉक्टर दीपक कड़वे, पार्षद नंदिनी तिवारी, राम नगर पार्षद अशोक नागले, पूर्व पार्षद संजू सोलंकी, समाजसेवी शशि किरण राजपूत, रिटायर्ड कंपाउंडर कुसुम बाई पांसे, बलवंत राव सोनी तथा इंदिराबाई सोनी सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे। सभी अतिथियों ने भगवान धन्वंतरि के चित्र पर माल्यार्पण कर आरती की और आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति के संरक्षण एवं प्रसार का संकल्प लिया। कार्यक्रम का वातावरण पूर्णतः धार्मिक और स्वास्थ्य जागरूकता से परिपूर्ण रहा।

गंज पुलिस ने अवैध चाकू लेकर घूमने वाले आरोपी को किया गिरफ्तार

बैतूल। थाना गंज पुलिस ने कानून-व्यवस्था बनाए रखने एवं असामाजिक तत्वों पर प्रभावी नियंत्रण के उद्देश्य से की गई कार्रवाई में अवैध चाकू लेकर घूमने

वाले एक युवक को गिरफ्तार किया है। गंज पुलिस को मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि मस्जिद चौक गंज में काली जी के जुलूस के दौरान एक व्यक्ति किसी को नुकसान पहुँचाने की नीयत से अवैध चाकू लेकर घूम रहा है। सूचना पर तत्काल कार्यवाही करते हुए थाना प्रभारी निरीक्षक नीरज पाल के नेतृत्व में पुलिस टीम द्वारा मौके पर रेड कार्यवाही की गई। कार्यवाही के दौरान आरोपी रितिक चन्द्रहास (उम्र 26 वर्ष, निवासी महेत्तर मोहल्ला, स्वीपर कॉलोनी, कोठी बाजार बैतूल) को गिरफ्तार किया गया। पूछताछ में आरोपी ने बताया कि रेलवे स्टेशन गंज क्षेत्र में हुए झगड़े के दौरान उसने चाकू निकाला था, किंतु पुलिस की सूचना मिलने पर वह वहां से भाग गया था। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से एक धारदार चाकू बरामद कर धारा 25 आर्म्स एक्ट के तहत अपराध पंजीबद्ध कर आरोपी को न्यायालय में पेश किया गया। इस कार्रवाई में निरीक्षक नीरज पाल, सउनि किशोरीलाल, प्रआर नीलेश, प्रआर चन्द्रकिशोर, प्रआर हितुलाल, आर सुरेन्द्र एवं सैनिक नितिन की विशेष भूमिका रही।

पुलिस ने की अवैध रूप से पटाखा सामग्री का भंडारण एवं विक्रय करने वाले के विरुद्ध की कार्यवाही

बैतूल। कोतवाली थाना पुलिस ने अवैध रूप से पटाखा सामग्री का भंडारण एवं विक्रय करने वाले के विरुद्ध कार्यवाही की है। दरअसल पुलिस अधीक्षक वीरेन्द्र जैन वीरेंद्र जैन द्वारा दीपावाली त्योहार के दौरान अवैध रूप से पटाखों के भंडारण एवं विक्रय पर रोक लगाने हेतु सभी थाना प्रभारियों को सतर्क रहते हुए विशेष अभियान चलाकर कार्यवाही करने के निर्देश जारी किए गए थे। इसी क्रम में थाना कोतवाली पुलिस ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए बिना लाइसेंस के पटाखा सामग्री का भंडारण एवं विक्रय करने वाले व्यक्ति के विरुद्ध मामला दर्ज किया है। पुलिस को मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई थी कि सीमेंट रोड पर डॉ. जौहरी के क्लीनिक के पास स्थित सुगम सिंगार गोदाम में अवैध रूप से पटाखों की बिक्री की जा रही है। सूचना पर थाना प्रभारी कोतवाली निरीक्षक सत्यप्रकाश सक्सेना के नेतृत्व में पुलिस टीम तत्काल मौके पर पहुंची।

बैतूल में 12 दिन बाद बारिश, फसलों पर संकट के बादल

बैतूल। शनिवार अचानक मौसम का मौसम का मिजाज बदल गया है और जिला मुख्यालय पर करीब 20 मिनट तक बारिश हुई। मौसम विभाग ने अगले 24 घंटों के भीतर गरज-चमक के साथ बारिश की संभावना है। मौसम विभाग के अनुसार, यह प्रणाली मध्यप्रदेश के दक्षिणी इलाकों को प्रभावित कर रही है, जिससे बैतूल और आसपास के जिलों में हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है। जिले में आखिरी बार 6 अक्टूबर को लगभग दो इंच बारिश दर्ज की गई थी। इसके बाद से मौसम शुष्क बना हुआ था। लगभग 12

दिनों के अंतराल के बाद अब फिर से बारिश के आसार बन रहे हैं।

भू-अभिलेख कार्यालय की वर्षा रिपोर्ट के अनुसार, इस वर्ष अब तक जिले में औसतन 1007.6 मिमी वर्षा दर्ज की गई है। पिछले वर्ष इसी अवधि में 1061.2 मिमी बारिश हुई थी। जिले का सामान्य औसत 1083.9 मिमी है, जिससे इस वर्ष थोड़ी कम वर्षा हुई है। सर्वाधिक वर्षा भैंसदेही क्षेत्र में 1478 मिमी दर्ज की गई है, जबकि सबसे कम आठनेर में 749.2 मिमी रही।

बारिश से फसलों पर मंडरा रहा संकट

बता दे कि शुक्रवार शाम को जिले के प्रभात पट्टन क्षेत्र में तेज बारिश हुई, जिससे खेतों में कटी पड़ी सोयाबीन की फसल भीग गई। खरीफ फसलों की कटाई इस समय जोरों पर है, और अचानक हुई इस बारिश से फसल के दानों में अंकुरण तथा गुणवत्ता पर प्रतिकूल असर पडऩे का खतरा बढ़ गया है। मौसम विभाग ने अगले दो से तीन दिनों तक जिले में बादल छाए रहने और बीच-बीच में बारिश व गरज-चमक की स्थिति बने रहने का अनुमान जताया है। विभाग ने किसानों को सलाह दी है कि वे कटी हुई फसलों को सुरक्षित स्थान पर रखें और जिन खेतों में कटाई बाकी है, उसे जल्द पूरा करें ताकि संभावित नुकसान से बचा जा सके।

धार जिला क्रिकेट एसोसिएशन के तहत अंडर-15 एवं अंडर -23 टीम के खिलाड़ियों का चयन ट्रायल्स

धार। संभागीय क्रिकेट एसोसिएशन इंदौर के निर्देशों के परिपालन में धार जिला क्रिकेट एसोसिएशन के द्वारा अंडर-15 एवं अंडर -23के लेदर बॉल क्रिकेट खिलाड़ियों का चयन ट्रायल्स 26 अक्टूबर रविवारको प्रात: 9 बजे डी.आर.पी.लाईन न्यू क्रिकेट मैदान पर होगा जिले की समस्त तहसील के खिलाडी चयन ट्रायल में भाग ले सकते है भाग लेने हेतू कट आफ डेट अंडर-15 के लिए 1/09/2010 रहेगी एवं अंडर-23 के लिए कट ऑफ़ डेट 01/09/2002 निर्धारित की गई है। खिलाड़ियों को पंजीयन कराना आवश्यक होगा एवं स्वयं की कीट साथ में लाना होगी पिछले 3 वर्षों की ओरिजिनल अंकसूची ,आधार कार्ड एवं डिजिटल जन्म प्रमाण पत्र अनिवार्य होगा पंजीयन शुल्क 300 रुपए रहेगा। अंडर-15 का टूर्नामेंट धार मे 05/11/2025 से प्रारंभ हो रहा है एवं अंडर-23 क्रिकेट टूर्नामेंट 28/10/2025को खंडवा मे आयोजित किया जावेगा।

बोलेरो-बैलगाड़ी की टक्कर 1 की मौत, 12 घायल

जाम सांवली से लौट रहे थे श्रद्धालु, फोरलेन पर हादसा

बैतूल। मुलताई के फोरलेन मार्ग पर एक बोलेरो वाहन और बैलगाड़ी की टक्कर हो गई। इस हादसे में एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 12 अन्य लोग घायल हो गए। घायलों में बोलेरो सवार और बैलगाड़ी पर सवार दंपत्ति शामिल हैं। घटना शनिवार दोपहर तकरीबन 11.30 बजे की है। मल्हारा पंखा के पास यह हादसा हुआ। बोलेरो में

सवार सभी लोग जाम सांवली से हनुमान जी के दर्शन कर अपने गांव कुटखेड़ी आमला विकासखंड लौट रहे थे। घायलों ने बताया कि, बोलेरो ड्राइवर ने एक ट्रक से साइड लेने के दौरान सामने से आ रही बैलगाड़ी को टक्कर मार दी, जिससे वाहन सडक़ किनारे पलट गया। मृतक की पहचान राजकुमार यादव के रूप में हुई है। घायलों को एनएचएआई और 108 एम्बुलेंस की मदद से सरकारी अस्पताल मुलताई लाया गया। प्राथमिक इलाज के बाद गंभीर घायलों को जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया गया है। एक्सीडेंट की जानकारी मिलते ही एसडीएम राजीव कहा सरकारी अस्पताल पहुंचे। उन्होंने घायलों को जल्दी-जल्दी बैतूल जिला अस्पताल रेफर कराया है। वहीं उन्होंने अन्य सारी व्यवस्थाएं भी अस्पताल में उपलब्ध कराई गईं।

हादसे में यह लोग हुए घायल –बोलेरो में घायल हुए लोगों में कैलाश यादव (52), रूकमणि, नकुल यादव (20), शीतल यादव (18), रीता यादव (30), उषा यादव (30), उदल यादव (60), कलिमा यादव (65), अमरावती यादव, रोहित यादव और लालवती (55) शामिल हैं। बैलगाड़ी पर सवार मल्हारा पंखा निवासी सविता सूर्यवंशी और अनिल सूर्यवंशी (32) भी घायल हुए हैं।

खाद्य सुरक्षा विभाग ने चिचोली तहसील से खाद्य पदार्थों के लिए सैंपल

बैतूल। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देश पर दीपावली पर्व में खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा जिलेभर में खाद्य पदार्थों का विक्रय करने वाले प्रतिष्ठानों की सघन जांच एवं नमूने लिए जाने की कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में अभिहित अधिकारी खाद्य सुरक्षा प्रशासन शैलेंद्र बड़ोनिया के मार्गदर्शन एवं एसडीएम अभिजीत सिंह के नेतृत्व में गठित जांच दल द्वारा चिचोली तहसील में विभिन्न खाद्य प्रतिष्ठानों की जांच कर नमूने लिए गए। निरीक्षण के दौरान संजय स्वीट एंड रेस्टोरेंट से

बेसन लड्डू, पेड़ा लूज, कपिल रेस्टोरेंट से बर्फी एवं नमकीन, जगदम्बा स्वीट से जलेबी, शिवम नाश्ता पॉइंट्स से जलेबी के कुल 06 नमूने लिए गए। लिए गए नमूने खाद्य परीक्षण प्रयोगशाला भोपाल भेजे जाएंगे तथा जांच रिपोर्ट के आधार पर कार्यवाही की जाएगी। करवाई सतत जारी रहेगी। खाद्य सुरक्षा जांच दल में तहसीलदार पीएस दीवान, थाना प्रभारी श्री पटेल, प्रधान आरक्षक मुकेश कुमार उईके, विक्रम सिंह टेकाम, विक्की सर्वेयर खाद्य सुरक्षा अधिकारी श्रीमती मीना कुमरे उपस्थित थी।

कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने जिला कोषालय में किया धनतेरस पूजन

धार । धनतेरस के शुभ अवसर पर प्रतिवर्ष की परंपरा के अनुसार जिला कोषालय के स्ट्रांग रूम में विधिवत पूजन-अर्चना का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कलेक्टर प्रियंक मिश्रा ने देवी लक्ष्मी और भगवान कुबेर की पूजा कर जिले की समृद्धि एवं खुशहाली की कामना की। पूजन उपरांत कलेक्टर श्री मिश्रा ने समस्त जिलावासियों को धनतेरस एवं दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए कहा कि यह पर्व सभी के जीवन में सुख, शांति और समृद्धि लेकर आए।कार्यक्रम के दौरान जिला कोषालय अधिकारी मानसिंह डामोर सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

धन्वन्तरि जयंती मनाई गई

धार। धन्वन्तरि जयंती के पावन अवसर पर अखिल भारतीय चिकित्सा संघ धार जिला इकाई द्वारा धन्वन्तरि पूजन कर समस्त भारतवासियों के अच्छे स्वास्थ्य की कामना की गई।इस अवसर पर डा अशोक शास्त्री अखिल भारतीय महामंत्री चिकित्सा महासंघ ,डा अभिषेक वैद्य जिला अध्यक्ष अखिल भारतीय चिकित्सा महासंघ , डॉ रमाकांत मुकुट सचिव रेड क्रॉस सोसायटी,डा पलाश मंडलेचा,आशीष वैद्य सचिव सरस्वती शिशु मंदिर समिति उदयराम जी आदि उपस्थित थे।

बैतूल बाजार में 23 अक्टूबर से शुरू होगी श्रीमद् भागवत कथा

बैतूल। धार्मिक नगरी बैतूल बाजार के कैलाश वार्ड में आगामी 23 अक्टूबर से श्रीमद् भागवत कथा ज्ञान यज्ञ सप्ताह का संगीतमय आयोजन किया जा रहा है। कथा का वाचन प्रसिद्ध कथा वाचक पंडित गोपाल कृष्ण गोस्वामी के मुखारविंद से होगा। कथा के शुभारंभ अवसर पर 23 अक्टूबर की सुबह 10 बजे कलश यात्रा निकाली जाएगी। प्रतिदिन प्रातः 8 बजे से 11 बजे तक संस्कृत पाठ एवं पूजन का आयोजन रहेगा, जबकि श्रीमद् भागवत कथा का वाचन प्रतिदिन दोपहर 2 बजे से शाम 5 बजे तक किया जाएगा। कथा का समापन 29 अक्टूबर को दोपहर 2 बजे पूर्णाहुति हवन एवं भोजन प्रसादी के साथ होगा। आयोजक कृष्ण कुमार वर्मा, श्रीमती मालती मधुसूदन वर्मा, शिवनारायण वर्मा, पुरुषोत्तम वर्मा, राजीव वर्मा और स्वप्निल वर्मा ने सभी श्रद्धालुओं से कथा श्रवण कर पुण्य लाभ अर्जित करने की अपील की है।

बैतूल के कलाकारों ने जयपुर में लहराया कोरकू संस्कृति का परचम

गडली-सुसुन नृत्य से किया मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व, कोरकू संस्कृति ने जीता सबका दिल

बैतूल। जवाहर कला केंद्र जयपुर में आयोजित 28वें लोकरंग महोत्सव में मध्यप्रदेश का प्रतिनिधित्व बैतूल जिले के लोक कलाकारों ने गडली-सुसुन नृत्य के माध्यम से किया। यह राष्ट्रीय लोकनृत्य समारोह 7 से 17 अक्टूबर तक चला, जिसमें देश के 8 राज्यों गुजरात, छत्तीसगढ़, राजस्थान, मध्यप्रदेश, केरल, महाराष्ट्र, लक्षद्वीप और तमिलनाडु की लोक संस्कृतियां साकार हुईं। मध्यप्रदेश की ओर से कोरकू संस्कृति के प्रसिद्ध गडली नृत्य की प्रस्तुति दल प्रमुख एच. जी. एस. प्रदेश संस्कृति रीति रिवाज प्रमुख महादेव बारस्कर के नेतृत्व में दी गई। टीम का संचालन और निर्देशन हमसे मिलना है तो होशंगाबाद आना गीत के प्रसिद्ध गायक सिंगर अर्जुन धोटे एवं डायरेक्टर परमेश बारस्कर के मार्गदर्शन में हुआ। कलाकारों ने नौवें और दसवें दिन मध्यवर्ती मंच पर कोरकू संस्कृति के पारंपरिक गडली नृत्य की मनमोहक प्रस्तुति देकर पूरे मध्यप्रदेश और कोरकू समुदाय को गौरवान्वित किया। ढोलक, बांसुरी और थापटी की लय पर जब पुरुषों ने सुसुन और महिलाओं ने गडली नृत्य किया, तो पूरा सभागार मंत्रमुग्ध हो उठा। गडली-सुसुन नृत्य कोरकू समुदाय की मूल

पहचान है। यह एक मांगलिक नृत्य है, जिसमें पुरुषों द्वारा किए जाने वाले नृत्य को सुसुन और महिलाओं द्वारा किए जाने वाले नृत्य को गडली कहा जाता है। कोरकू समुदाय में नृत्य सदैव सामूहिक रूप में ही किया जाता है। यह परंपरा पूरे वर्ष धार्मिक अनुष्ठानों, दशहरा, दिवाली और शिवरात्रि जैसे पर्वों पर निभाई जाती है। पुरुष ढोलक और बांसुरी की थाप पर नृत्य करते हैं, जबकि महिलाएं चिटकोरी नामक वाद्य यंत्र बजाती हैं, जिसमें घुंघरू लगे होते हैं।

बैतूल जिले के कलाकारों ने किया उत्कृष्ट प्रदर्शन

लोकरंग महोत्सव के समापन पर कला, साहित्य, संस्कृति, पर्यटन एवं पुरातत्व विभाग के प्रमुख शासन सचिव राजेश यादव ने लोकरंग का झंडा उतारकर 11 दिवसीय राष्ट्रीय लोकनृत्य समारोह और राष्ट्रीय हस्तशिल्प मेले का विधिवत समापन किया। इस अवसर ने भारत की विविध सांस्कृतिक छवि को साकार करते हुए लोककला, नृत्य और संगीत की सुनहरी यादें छोड़ीं, वहीं बैतूल जिले के कलाकारों ने अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से मध्यप्रदेश और कोरकू समाज का नाम गौरवान्वित किया।

दुष्कर्म के तीन दोषियों को 20 साल की सजा

बस स्टैंड से लिफ्ट देकर ले गए थे आरोपी, खेत में किया था दुष्कर्म

बैतूल। बैतूल द्वितीय अपर सत्र न्यायाधीश की अदालत ने चिचोली थाना क्षेत्र के एक बहुचर्चित सामूहिक दुष्कर्म मामले में फैसला सुनाया। अदालत ने तीन आरोपियों को दोषी करार देते हुए 20-20 वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई है। वहीं, चौथे आरोपी ओझा बटके को संदेह का लाभ देते हुए बरी कर दिया गया। यह मामला अगस्त 2022 में हुई सामूहिक दुष्कर्म की वारदात से जुड़ा है। अभियोजन के अनुसार, 23 अगस्त 2022 की रात 19 वर्षीय पीड़िता अपने चचेरे भाई के साथ उसके गांव के बस स्टैंड पर बस का इंतजार कर रही थी। तभी आरोपी ओझा बटके अपनी कार से आया, जिसमें कालेसिंह उर्फ कालिया मर्सकोले, सालकराम बटके और राहुल मर्सकोले भी बैठे थे। ओझा ने पीड़िता को भीमपुर छोडऩे की बात कही, जिस पर उसके भाई ने उसे भेज दिया। रास्ते में एक मंदिर के पास कार रोककर कालेसिंह, सालकराम और राहुल ने पीड़िता को जबरदस्ती खेत की ओर खींच लिया। जब पीड़िता के भाई ने विरोध किया, तो राहुल ने उसे रोक लिया, उसकी पिटाई की और बांध दिया। इसके बाद, खेत में बने टपरे में कालेसिंह उर्फ कालिया मर्सकोले, सालकराम बटके और राहुल मर्सकोले ने पीड़िता के साथ बारी-बारी से दुष्कर्म किया और उसे जान से मारने की धमकी दी। पीड़िता ने घटना के छह दिन बाद, 29 अगस्त 2022 को चिचोली थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई थी। पुलिस ने अपराध दर्ज कर 28 अक्टूबर 2022 को न्यायालय में आरोप पत्र पेश किया।

तीन आरोपियों को 20 साल की सजा, एक बरी

...अदालत ने सबूतों के आधार पर सालकराम बटके, कालेसिंह उर्फ कालिया मर्सकोले और राहुल मर्सकोले को दोषी पाया। उन्हें धारा 376(डी) के तहत 20-20 वर्ष का कठोर कारावास और धारा 506(2) के तहत 7-7 वर्ष का कारावास एवं अर्थदंड से दंडित किया गया। सभी सजाएं साथ-साथ चलेंगी।

हर घर दिवाली अभियान के तहत बच्चों, बुजुर्गों को भेंट किए उपहार

छोटी-छोटी खुशियां बांटने से ही मिलता है सही आनंद- निमिषा शुक्ला

बैतूल। राज्य आनंदम संस्थान के अंतर्गत पंजीकृत संस्था प्रत्याशा आनंद क्लब ने हर घर दिवाली अभियान के तहत विकास वार्ड की आनंद आंगनवाड़ी में बच्चों के बीच पटाखे, कपड़े, खिलौने, मिठाई एवं दिए वितरित किए। प्रत्याशा आनंद क्लब की अध्यक्ष तूलिका पचौरी ने बताया कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य यह है कि जो दिवाली मनाने में असमर्थ होते हैं हमारे द्वारा ऐसे जरूरतमंद परिवारों को दिवाली मनाने के लिए पटाखे, दिए, कपड़े, मिठाई, भेंट की जाती है। श्रीमती निमिषा शुक्ला ने बताया कि हम हर वर्ष ऐसे परिवारों के साथ दिवाली मनाते हैं और खुशियां बांटते हैं। इस अवसर पर प्रत्याशा आनंद क्लब की ओर से अध्यक्ष एवं मास्टर ट्रेनर तूलिका पचौरी निमिषा शुक्ला, प्रमिला धोत्रे, कार्तिका मिश्रा, दामोदर मिश्रा, प्रेरणा शर्मा सहित आंगनवाड़ी कार्यकर्ता उषा सातनकर, गीता रावत, शारदा वानखेडे और करुणा जैन उपस्थित थे।

‘बैटल ऑफ गलवान’

सलमान खान मचाएंगे असली धमाल

सलमान खान इस समय फ्रंट फुट पर खेल रहे हैं. जो भी लोग उनके खिलाफ बयान दे रहे हैं, वो एक-एक कर सबको खुद नेशनल टीवी पर जवाब देते हैं। अब तक अपनी ही फिल्मों के दो डायरेक्टरों के बयान पर पलटवार किया। इस बीच उनका पूरा फोकस अगली वॉर फिल्म ‘बैटल ऑफ गलवान’ पर है। लेकिन, असली खेल उसके बाद शुरू होगा, क्योंकि एक्टर अपना पसंदीदा काम करने वाले हैं।

सलमान खान इस वक्त समय फ्रंट फुट पर खेल रहे हैं। जैसे ही कोई उन पर या उनकी फिल्मों पर बयान देता है, वे तुरंत पलटवार करते हैं। ‘बिग बॉस 19’ होस्ट कर रहे सलमान खान ने अपने दुश्मनों को चित्त कर दिया। साथ ही कुछ पुराने डायरेक्टर्स और दोस्त भी हैं, जिनके दिए बयानों पर रिएक्शन देते नजर आए हैं। सलमान का इस वक्त एक अलग ही मोड ऑन है, पर फोकस अब भी अपकमिंग फिल्म पर है। वे इस समय अपूर्व लाखिया की ‘बैटल ऑफ गलवान’ की शूटिंग कर रहे हैं। इस फिल्म के बाद उन्हें एक और प्रोजेक्ट कंप्लीट करना है।

यूं तो सलमान खान ‘सिकंदर’ से जैसी वापसी करना चाहते थे, वैसा हुआ नहीं। फिल्म रिलीज होते ही बुरी तरह से डूब गई.पर उससे पहले भी ‘टाइगर 3’ उम्मीदों पर खरा नहीं उतर सकी। अब उनकी अगली फिल्म की बारी, जिसे लेकर कड़ा बज बना हुआ है। इस फिल्म का कुछ वक्त पहले ही लद्दाख वाला शेड्यूल खत्म किया। वहीं अब मुंबई में ही आगे का काम किया जा रहा है।

एक न्यूज वेबसाइट में रिपोर्ट छपी, जिससे पता लगा कि सलमान खान इन दिनों मुंबई में एक अहम देशभक्ति वाले गाने की शूटिंग कर रहे हैं। इसमें उनके साथ 60 से ज्यादा बैकग्राउंड डांसर भी मौजूद हैं। मुदस्सर खान ने इस गाने को कोरियोग्राफ किया, जो भारतीय सैनिकों के स्पिरिट को इमोशनल ट्रिब्यूट होगा। साथ ही यह भी कहा गया कि यह कोई जश्न मनाने वाला गाना नहीं है और न इसमें कोई धूम-धड़ाका होगा। इस गाने का मूड देशभक्ति से भरा है, जो सैनिकों के गर्व, बलिदान और

दर्द को फिल्म में दिखाएगा।

दरअसल, सलमान और अपूर्व लाखिया इस बात को लेकर काफी क्लियर हैं कि यह कहानी से कनेक्ट होना चाहिए. बताया जा रहा है कि मुदस्सर खान का फोकस इस बार कोरियोग्राफी वाले मूव्स पर उतना नहीं है। बल्कि, वे सैनिकों के इमोशंस को बेहतरीन ढंग से दिखाने पर ध्यान दे रहे हैं। फिलहाल फिल्म का शूट जारी है, जो चलेगा। इससे पहले भी मुदस्सर खान और सलमान खान साथ में काम कर चुके हैं। साल 2010 में आई दबंग और 2011 की रेडी में धूम मचाई थी। ऐसे में लोगों को इस इमोशनली इटेंस सीक्वेंस से उम्मीदें बढ़ गई। हाल ही में बिग बॉस 19 के स्टेज से सलमान खान ने बताया था कि अरिजीत सिंह इस फिल्म में गाना गा रहे हैं। दोनों के बीच जो कुछ भी था, वो सुलझ चुका है और दोनों अच्छे दोस्त हैं। ,ऐसे में लोग उम्मीद लगा रहे हैं कि इसी गाने में अरिजीत की आवाज सुनने को मिल सकती है।

‘द लंचबॉक्स’ के सीक्वल में अब ये एक्टर

अब इरफान खान दुनिया में नहीं हैं। पर, उनकी फिल्में और किरदार विरासत के रूप में मौजूद हैं। इरफान ने अपने करियर में कई बेहतरीन फिल्में दीं, जिनमें से एक ‘द लंचबॉक्स’ भी है। साल 2013 में आई इस फिल्म में नवाजुद्दीन सिद्दीकी और निमृत कौर भी थीं। अब इस फिल्म का सीक्वल बनेगा। हाल ही प्रोड्यूसर गुनीत मोंगा ने ‘द लंचबॉक्स’ के सीक्वल के बारे में बात की। साथ ही बताया कि इरफान की जगह अब कौन एक्टर रोल के लिए परफेक्ट रहेगा।

गुनीत मोंगा हाल ही कोमल नाहटा के पॉडकास्ट ‘गेम चेंजसर्- द प्रोड्यूसर सीरीज’ में पहुंची थीं। बातचीत के दौरान उनसे ‘द लंचबॉक्स’ के बारे में बात की गई। गुनीत मोंगा से फिल्म के काल्पनिक सीक्वल को लेकर पूछा गया कि वह फिल्म में नवाजुद्दीन सिद्दीकी के साथ किस एक्टर को लेना चाहेंगी। ‘द लंचबॉक्स’ में पहले नवाजुद्दीन के साथ इरफान थे। इरफान का साल 2020 में कैंसर से निधन हो गया था।

गुनीत मोंगा ने कहा कि वह ‘द लंचबॉक्स’ के सीक्वल में इरफान वाले रोल के लिए अनिल कपूर को लेना चाहेंगी। ‘द लंचबॉक्स’ की बात करें, तो इसकी कहानी साजन फर्नांडिस नाम के एक व्यक्ति की थी, जो अकेला रहता है। उसका रोल इरफान ने निभाया था। इला नाम की महिला लंचबॉक्स की डिलीवरी का काम करती है। एक दिन गलत डिलीवरी हो जाती है और लंचबॉक्स इरफान के पास पहुंच जाता है, जिसमें एक चिट्ठी भी थी। इसके बाद दोनों के बीच चिट्ठियों और लंचबॉक्स के जरिए बातचीत का सिलसिला शुरू हो जाता है।

रियल बॉक्स

दिवाली का उत्सव यानी प्रतीकों का सामंजस्य

हेमंत पाल

लेखक ‘सुबह सवेरे’ इंदौर के स्थानीय संपादक है।

हिं दिवाली घर-आंगन की साज-सज्जा, पूजा, पारिवारिक समागम और सामाजिक समरसता का त्यौहार है। यही वजह है कि इस त्यौहार से जुड़ी फिल्मों में भारतीय संस्कृति नजर आती है। बरसों से फिल्मों में हमेशा से दिवाली को बहुत खास और रंगीन अंदाज में दिखाया जाता रहा है। ये ऐसा त्यौहार है, जो हमेशा पारिवारिक मेलजोल, खुशी, भावनात्मक पुनर्मिलन और रोशनी के प्रतीकों के साथ प्रस्तुत किया जाता है। यह त्यौहार सिनेमा के रूप में भारतीय संस्कृति की आत्मा दर्शाता है। लेकिन, एक खास बात यह कि दिवाली पहली बार परदे पर कब दिखाई गई, यह बताना मुश्किल है। लेकिन, 1960 की फिल्म ‘जुगनू’ का गाना ‘मेरा तुम्हारा सबका यहां ...’ एक दिवाली दृश्यों के उदाहरणों में गिना जाता है। 1990 के दशक और 2000 के बाद दिवाली दृश्य विशेष रूप से पारिवारिक गीतों और इमोशनल दृश्यों के साथ हर दशक की बड़ी फिल्मों में दिखाई दिए। हम आपके हैं कौन (1994) में दिवाली पर परिवार के साथ ‘धिक ताना’ जैसे गाने से उत्सव और सामूहिकता का जश्न दिखाई दिया। जबकि, ‘चाची 420’ (1997) में पटाखों से दुर्घटना के सीन और बच्चों की सुरक्षा के जरिए दिवाली की रियलिटी की झलक दिखाई गई। ‘तारे ज़मीं पर’ (2007) फिल्म में दिवाली के मौके पर अकेलेपन और घर की याद की भावनाएं बयां की गई, जिससे त्यौहार का संवेदनशील पक्ष उजागर हुआ। ‘वास्तव’ (1999) में फिल्म का मुख्य किरदार अपने परिवार से दिवाली पर मिलता है और ‘पचास तोला सोना’ जैसा डायलॉग को त्यौहार के अलग ही रंग से जोड़ता है। 2001 की फिल्म ‘आमदनी अठन्नी खर्चा रुपैया’ का गीत ‘आई है दिवाली सुनो जी घरवाली’ जैसे मस्तीभरे गाने के साथ आम लोगों की दिवाली भी दिखाई गई।

फ़िल्मी कथानकों में दिवाली का त्यौहारों कुछ अलग है। होली या जन्माष्टमी के प्रसंग फिल्मों में धूम, मस्ती और कहानी में मोड़ का कारण बनते हैं, पर दिवाली कहानी का हिस्सा होते हुए, कई फिल्मों में प्रतीकात्मक और भावनात्मक अर्थ रखता है। रोमांटिक व पारिवारिक फिल्मों में त्यौहार के दृश्य परिवार, भारतीय परंपरा और भावनात्मक पुनर्मिलन के प्रतीक रहे हैं। दिवाली के दृश्यों वाली और उस थीम को दर्शाने वाली कई यादगार फिल्में हिंदी सिनेमा के उस इतिहास में दर्ज हैं, जो ब्लैक एंड व्हाइट से आजतक फैला हुआ है। इस त्यौहार को प्रतीकात्मकता और बदलते दृष्टिकोण के रूप में भी देखा गया। यही वजह है कि दिवाली के दृश्य कई बार घर वापसी, एकजुटता, नई शुरुआत और पारिवारिक मूल्यों के प्रतीक बने। नई फिल्मों में जहां भव्यता, पटाखों और भव्य सेट्स की भरमार दिखती है, वहीं ‘तारे जमीं पर’ जैसी कुछ फ़िल्में दिवाली के इमोशनल या सामाजिक पहलुओं को भी उजागर करती हैं। ऐसे में ‘जंजीर’ का प्रसंग अलग ही है, जिसमें नायक अमिताभ बच्चन बचपन में दिवाली के धमाकों के बीच अपने माता-पिता की हत्या होते देख लेता है और पूरी फिल्म में खलनायक को खोजता है। दरअसल, फ़िल्मी कथानकों में दिवाली को न केवल जश्न, बल्कि भावनाओं, मेल-मिलाप और पारिवारिक रिश्तों के गहरे प्रतीकों के साथ चित्रित किया गया। इस कारण यह त्यौहार फिल्मों में भारतीय जीवनशैली और संवेदनाओं का अभिन्न हिस्सा बना।

फिल्मों में दिवाली के बदलते सामाजिक अर्थों को समय के साथ बहुत गहराई और विविधता के साथ दिखाने के प्रयोग किए गए। पहले, ज्यादातर फिल्मों में दिवाली पारंपरिक, पारिवारिक आयोजन के रूप में मनती थी। लेकिन, हाल के दशकों में यह बदलाव घर वापसी, सामाजिक सामंजस्य और आंतरिक संघर्षों का प्रतीक बन गई। पारंपरिक रूप से आधुनिक संदर्भों में सामाजिक विकास से तात्पर्य है पुनर्मिलन और आपसी मेल-मिलाप। यह भी कहा जा सकता है, कि दिवाली का प्रतीक लंबे अरसे बाद घर लौटना, परिवार का मिलना और गिले-शिकवे दूर करने का बहाना भी बन गया। ‘कभी खुशी कभी गम’ में राहुल (शाहरुख़ खान) की घर वापसी दिवाली के मौके पर दिखाई गई, जिससे त्योहार परिवार और रिश्तों की शक्ति का वाहक बन गया। जबकि, ‘मोहब्बतें’ में यही भावनात्मक मोड़ लाता है। दिवाली पर पारिवारिक प्रसंग कई फिल्मों में कहानी में मोड़ लाता है जिसमें रिश्ते बदलते हैं, चरित्रों की सोच और भावनाएं नई दिशा की तरफ मुड़ती हैं। याद किया जाए तो राजश्री की फिल्म ‘हम आपके हैं कौन’ में कुछ ऐसा ही था।

साधारण पारिवारिक उत्सव और पूजा के छोटे सीमित होते थे। जबकि, अब ये दृश्य भव्य पार्टियों, आधुनिकता और रिश्तों की जटिलताएं दिवाली के आस-पास बुनी जाती हैं। विशेष परिस्थितियों में दिवाली के प्रसंग ने ‘अनुराग’ या ‘वक्त’ जैसी फिल्मों में सामाजिक टूटन या त्रासदी की भूमिका भी निभाई, जिससे त्योहार में संवेदना और जीवन की सच्चाइयां दिखती हैं। फिल्मों में दिवाली केवल रोशनी और उल्लास का ही उत्सव नहीं, बल्कि पुनर्मिलन, व्यक्तिगत विकास, सामाजिक विचार और संबंधों की विविधता का रूपक बनी है। समय के साथ दिवाली में सामाजिक बदलाव, भावनात्मक गहराई और समकालीन समाज के सवालों को भी फिल्मों में बखूबी से पिरोया गया। 1990 के दशक और 2000 के बाद दिवाली दृश्य विशेष रूप से पारिवारिक गानों और इमोशनल दृश्यों के साथ हर दशक की बड़ी फिल्मों में दिखाई देने लगे। यह भी गौर करने वाली बात है कि नई फिल्मों में जहां भव्यता, पटाखों और भव्य सेट्स की भरमार दिखती है, वहीं कुछ फिल्में दिवाली के इमोशनल या सामाजिक पहलुओं को भी उजागर करती हैं।

जहां तक दिवाली के प्रतीक और रीति-रिवाजों का सवाल है, तो फिल्मों में प्रतीकों और रीति-रिवाजों को अक्सर रंगीन, भावनात्मक और पारिवारिक भावनाओं के साथ प्रस्तुत किया गया। इन दृश्यों में परंपरागत पूजा, दीपक-दीये, पटाखे, मिठाइयां, रंगोली और पारिवारिक मिलन जैसे त्योहार के मूल तत्व प्रमुखता से दिखाए जाते रहे हैं। दिवाली के प्रमुख प्रतीक के रूप में घर की सजावट में दीपक ‘कभी खुशी कभी ग़म’ में भव्य सजावट और दीयों की कतारें दिखाई दी। कई फिल्मों में महिलाएं और बच्चे मिलकर रंगोली बनाते दिखाई देते रहे। रंगीन और कलात्मक रंगोली घर के आंगन, प्रवेश द्वार और पूजा स्थल के पास बनाई जाती है। इसी तरह परिवार के सदस्यों के साथ लक्ष्मी-गणेश पूजन और आरती ‘हम आपके हैं कौन’ और ‘कभी खुशी कभी ग़म’ में दिखाई दी। ‘चाची 420’ और ‘गोलमाल 3’ में फुलझड़ी और पटाखों से हल्के-फुल्के हादसे फिल्माए गए। ऐसे उत्सव पर परिवार के सामूहिक भोज का भी अपना अलग महत्व है। ऐसे दृश्य ‘हम आपके हैं कौन’ और ‘मोहब्बतें’ के गानों में दिखाई दिए। दिवाली के मौके पर बिछुड़े परिवारों का मिलन, पुराने गिले-शिकवे दूर होना ‘कभी खुशी कभी ग़म’ और ‘वास्तव’ में दिखाया गया है। इस नजरिए से कहा जा सकता है कि फिल्मों में दिवाली सिर्फ रोशनी, दीपक, सजावट और पटाखों तक सीमित नहीं है। बल्कि, प्रतीकात्मक रूप से इन सभी प्रसंगों का अपना अलग महत्व है। कहा जा सकता है कि दिवाली मनाने का तरीका सिर्फ समाज में ही नहीं, फ़िल्मी कथानकों में भी बदला है।

2001 की फिल्म ‘कभी ख़ुशी कभी गम’ में दिवाली पूजन, घर की सजावट, पारिवारिक पुनर्मिलन दर्शाया गया जिसमें जया बच्चन अपने बेटे शाहरुख के लौटने का इंतजार बेहद भावुक तरीके से करती दिखाई देती है। यह दृश्य प्रतिष्ठित और परिवार के पुनर्मिलन एवं भारतीय भावनाओं को दर्शाने वाली दिवाली के प्रतीक से जोड़ता है। इसी तरह यश चोपड़ा की फिल्म ‘मोहब्बतें’ में दिवाली के मौके पर ‘जोड़ों में बंधन है’ गीत सुनाई देता है, जो पारिवारिक रिश्तों, रोशनी और उल्लास के उत्सव का अहसास कराता है। जबकि, ‘वास्तव’ में संजय दत्त दिवाली पर परिवार से जिस तरह मिलते हैं, वह सामाजिक-आर्थिक संघर्ष के बीच उत्सव की गर्माहट का प्रतीक हैं। ‘दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे’ (1995) ऐसी फिल्म रही, जो दिवाली पर रिलीज होकर सबसे ज्यादा सफल फिल्मों में गिनी जाती है और आज भी दिवाली के अवसर पर बॉक्स ऑफिस की मिसाल मानी जाती है।

आज के दौर की फिल्मों में दिवाली केवल त्यौहार तक सीमित नहीं है, बल्कि आत्ममंथन, बदलाव और सामाजिक चेतना का उपाय भी बनती दिखाई दी। ‘स्वदेश’ में फिल्म के नायक के भीतर यह उत्सव देश से जुड़ाव और बदलाव का प्रतीक बनता है। जबकि ‘तारे जमीं पर’ में अकेलापन, परिवार की चिंता और अंततः स्वीकृति की भावना दिखाई दी। सामाजिक संदर्भ में इस फिल्म को देखा जाए, तो ‘वास्तव’ जैसी फिल्मों में दिवाली अपराध और सामाजिक सच्चाई से जुड़े दृश्यों पर भी केंद्रित है, जिससे यह सिर्फ खुशी नहीं, सामाजिक जटिलताओं का प्रतीक भी बनती है। पुराने समय की फिल्मों में

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

बॉलीवुड के लिए दिवाली कितनी उजली कितनी काली

अशोक जोशी

बॉलीवुड में दिवाली के विषय पर कोई खास फिल्म नहीं बनाई जाती। लेकिन, कुछ फिल्मकार इस जगमगाते पर्व पर अपनी फिल्में प्रदर्शित कर बॉक्स ऑफिस पर जमकर आतिशबाजी की कामना जरूर करते हैं। पहले जब फिल्म निर्माण में दो से तीन साल या इससे

भी ज्यादा समय लगता था, तब फिल्में प्रदर्शित करने की तारीख के बारे में पूर्वानुमान लगाना बेहद मुश्किल होता था। लेकिन, कुछ सालों से फिल्म निर्माण नियोजित तरीके से होने लगा। कुछ फिल्मकार फिल्म बनाते समय ही इसकी प्रदर्शन तिथि की घोषणा कर देते हैं। कुछ फिल्मकार ऐसे भी हैं जिन्हें अपनी फिल्मे प्रदर्शित करने के लिए दीवाली का समय सबसे ज्यादा उपयुक्त लगता है।

हिं दिवाली पर सिनेमाघरों में धमाका करने वाले सितारों में शाहरूख खान का नाम सबसे पहले आता है । उनकी ज्यादातर हिट फिल्में दीवाली की जगमग के बीच ही प्रदर्शित होकर बॉक्स ऑफिस पर जगमगाई है। आदित्य चोपड़ा की सुपरहिट फिल्म ‘दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे’ भी दिवाली के मौके पर साल 1995 में रिलीज हुई। ये फिल्म हिंदी सिनेमा के इतिहास की सबसे सफल फिल्मों में से एक है। फिल्म में शाहरुख खान और काजोल की जोड़ी ने खूब धमाल मचाया था। 1997 में दिवाली के मौके पर रिलीज हुई शाहरुख़ की फिल्म ‘दिल तो पागल है’ भी सुपरहिट हुई थी। इस फिल्म में शाहरुख के अलावा माधुरी और करिश्मा कपूर मुख्य भूमिका में थे. फिल्म में दर्शकों ने इस तिकड़ी को काफी पंसद किया।

1998 में करन जौहर के निर्देशन में बनी फिल्म ‘कुछ कुछ होता है’ में शाहरुख काजोल के साथ नजर आए थे। फिल्म एक प्रेम त्रिकोण थी, जिसे दर्शकों ने काफी सराहा। शाहरुख खान और कटरीना कैफ़ की फिल्म ‘जब तक है जान’ भी साल 2013 में दिवाली के मौके पर रिलीज हुई थी, जिसका निर्देशन यश चोपड़ा ने किया था। यश चोपड़ा की ये आखिरी फिल्म थी। इस फिल्म में शाहरुख खान, कटरीना कैफ और अनुष्का शर्मा लीड रोल में थे। फराह खान निर्देशित ‘हैप्पी न्यू ईयर’ भी दिवाली पर प्रदर्शित शाहरुख की हिट फिल्म में से एक है। 2014 में रिलीज हुई इस फिल्म में शाहरुख खान, दीपिका पादुकोण, अभिषेक बच्चन, बोमन ईरानी सोनू सूद मुख्य भूमिका में थे।

शाहरुख के अलावा आमिर खान की 1996 में प्रदर्शित फिल्म ‘राजा हिन्दुस्तानी’ भी दीवाली पर प्रदर्शित होकर धूम मचा चुकी है।

2012 में अजय देवगन की फिल्म ‘सन ऑफ सरदार’ का प्रदर्शन भी दीवाली के अवसर पर हुआ था। इस दौरान शाहरुख खान की ‘जब तक है जान’ भी प्रदर्शित हुई थी। दोनों फिल्मों के प्रचार के दौरान कुछ ऐसी बात हुई कि शाहरुख को अपनी प्रिय नायिका काजोल की नाराजगी तक सहन करनी पड़ी थी। ऐसा ही टकराव 2006 की दिवाली पर शाहरुख खान की ‘डॉन’ और ‘जानेमन’ के बीच हुआ था। फिर 2007 की दिवाली पर शाहरुख खान की ‘ओम शांति ओम’ और सलमान खान की ‘सांवरिया’ के बीच टकराव हुआ था।

लेकिन, कुछ फिल्में दिवाली पर प्रदर्शित जरूर होती है, पर फुस्सी बम बनकर रह जाती है। 2009 में ‘आल द बेस्ट’ ने कुछ चिंगारियां जरूर पैदा की लेकिन ‘ब्लू’ और ‘मैं और मिसेज खन्ना’ फुस्सी बम साबित हुई। 2010 में यही कहानी दोहराई गई जब ‘गोलमाल 3’ दिवाली का धमाका साबित हुई। लेकिन, इसके साथ प्रदर्शित अक्षय कुमार की फिल्म ‘एक्शन रिप्ले’ जरा भी चमक नहीं बिखेर सकी। 2015 में सूरज बडजात्या की फिल्म ‘प्रेम रतन धन पायो’ से टकराने के लिए कोई निर्माता सामने नहीं आया। यह फिल्म हिट रही। 2016 की दिवाली पर प्रदर्शित फ़िल्में ‘ए दिल है मुश्किल है’ और ‘शिवाय’ दोनों 100 करोड के क्लब मे शामिल होने के बावजूद निर्माण लागत ज्यादा होने से फ्लाप ही कहलाई।

2017 में भी दीवाली पर ‘गोलमाल अगेन’ और ‘सीक्रेट सुपर स्टार’ का टकराव हुआ।

इस टक्कर में ‘गोलमाल अगेन’ तो मालामाल हो गई। लेकिन, सीक्रेट सुपरस्टार’ बॉक्स ऑफिस पर फ्लॉप स्टार साबित हुई । 2018 की दिवाली बेहद चौंकाने वाली थी। इस दिन बडे सितारों बडे निर्माता की फिल्म होने के बावजूद ‘ठग्स ऑफ हिन्दोस्तान’ फुस्स हो गई। अमिताभ बच्चन, आमिर खान और यशराज फिल्म्स का बैनर भी इसे चला नहीं पाया।

इसके बाद की दो दिवाली को तो कोरोना की स्याही ने ढक दिया। 2019 और 2020 की दिवाली तो बॉलीवुड के लिए स्याह ही रही। इस दौरान न तो कोई सिनेमाघर ही चालू हुआ और न कोई फिल्म प्रदर्शित ही हुई। ओटीटी पर जरूर दीपावली के दौरान लूडो, छलांग और ‘लक्ष्मी’ प्रदर्शित हुई। लेकिन, माता लक्ष्मी इनसे रूठी रही। 2021 की दिवाली से कोरोना का कोहरा छटा और इस साल रोहित शेट्टी की अक्षय कुमार अभिनीत ‘सूर्यवंशी’ ने सन्नाटा तोड़ा। हालांकि, इस दौरान सिनेमा घर 50त्न क्षमता के साथ चालू किए गए थे। फिर भी ‘सूर्यवंशी’ ने बॉक्स ऑफिस पर चमक का सिलसिला आरंभ कर दिया था।

2022 में दिवाली पर अक्षय कुमार की ‘रामसेतु’ और अजय देवगन की ‘थैंक गॉड’ प्रदर्शित हुई। इन दोनों फिल्मों का प्रचार सुतली बम की रस्सी की तरह धीरे धीरे सुलगता रहा और निर्माता कयास लगाते रहे कि यह धमाका करेंगी। लेकिन दोनों ही फुस्सी बम साबित हुई। 2023 में दिवाली के अवसर पर 12 नवम्बर को फिल्म ‘टाइगर 3’ प्रदर्शित हुई थी। इसमें सलमान खान, कैटरीना और इमरान हाशमी की बारूद भरी गई थी। लिहाजा फिल्म धमाका कर गई। इससे पहले 3 नवम्बर को ‘हुक्स बुक्स’ प्रदर्शित हुई। पर, अरुण गोविल और दर्शिल सफारी की जोडी कोई कमाल नहीं दिखा सकी और बॉक्स ऑफिस के लिए इस साल की दिवाली एक फिल्म की चमक वाली ही निकली।

पिछले साल 2024 की दिवाली पर कई हिंदी फ़िल्में रिलीज़ हुईं, जिनमें 'भूल भुलैया 3' (हॉरर-कॉमेडी) और 'सिंघम अगेन' (एक्शन थ्रिलर) जैसी बहुप्रतीक्षित फ़िल्में शामिल थीं। इनके अतिरिक्त, अमरन, लकी बसखार और ‘बघीरा’ जैसी फ़िल्में भी इस दौरान सिनेमाघरों में प्रदर्शित हुईं। एक हॉरर-कॉमेडी फ़िल्म) ‘भूलभुलैया 3’ प्रदर्शित जिसमें कार्तिक आर्यन, तृप्ति डिमरी और विद्या बालन जैसे पटाखों ने धमाका कर दिखाया था। इसके साथ ही रोहित शेट्टी की कॉप यूनिवर्स की एक बहुप्रतीक्षित एक्शन फ़िल्म ‘सिंघम अगेन’ भी रिलीज़ हुई। रोहित की फिल्मों में वैसे भी धमाके कुछ खास ही होते हैं लिहाजा पिछले साल दिवाली पर यह दो धमाके जरूर हुए। लेकिन, इसके साथ प्रदर्शित बघीरा, लकी बसखार, ब्रदर और ब्लडी बैगर न तो बॉक्स ऑफिस पर धमाका कर सके और न चमक बिखेर सके।

इस साल की दिवाली को लेकर बॉलीवुड कुछ ज्यादा ही आशावान लगता है। इस दिवाली दो हिंदी फ़िल्में रिलीज़ होने वाली हैं। पहली है आयुष्मान खुराना और रश्मिका मंदाना की हॉरर-कॉमेडी ‘थामा’ और हर्षवर्धन राणे और सोनम बाजवा की रोमांटिक ड्रामा ‘एक दीवाने की दीवानियत।’ ये दोनों फ़िल्में 21 अक्टूबर 2025 को सिनेमाघरों में रिलीज़ होंगी। यह देखना दिलचस्प होगा कि शाहरुख खान के बिना इस साल की दिवाली बॉलीवूड क्या धमाका करता है!

कोई (तो) बताए... कि हम बताएं क्या !

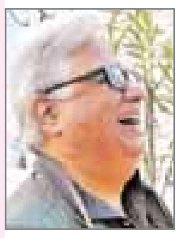

प्रकाश पुरोहित

आज उन्हें कहीं नहीं जाना था यानी दिल्ली में ही रहना था कि शाम को भाषण देना था, इसलिए बंगले पर ही रिएक्शनरियों/प्रतिक्रिया/टिप्पणी/संवेदना लिखने वालों की बैठक बुला ली।

''आप लोग सभी मेरे नेतृत्व में बढ़िया काम कर रहे हैं, लेकिन इस बात का भी ध्यान रखिए कि जो कुछ मेरी तरफ से आप लोग लिखते हैं, उस बारे में कम से कम मुझे तो पहले से बता दिया करें। वह तो गनीमत है कि प्रेस से नहीं मिलता हूं, वरना तो आप मेरी भद ही पिटवा दो बाजार में। जानता हूं कि जनता भी जानती है कि कौन लिख रहा है मेरे लेख और मेरी बात, लेकिन आंख की शरम भी तो कोई चीज होती है या नहीं !

तो जाए कि बिहार में नहीं, यूपी में गिरा है।

''और आप तुरखियाजी..., आप तो गुजरात से मेरे साथ हैं, ये बड़े-बड़े साहित्यकारों के जन्मदिन और पुण्यतिथि पर श्रद्धांजलि और उनके बारे में दो-चार खास बातें आप समय से देते हैं, बल्कि इतनी जल्दी दे देते हैं, जैसे मरने वाला कह कर मरा हो, लेकिन मेरी दिक्कत भी तो समझिए कि अपनी मदर-टंग के लेखकों को ही नहीं पढ़ा है और आप नोबेल... और वो क्या है... 'बे-कार'... या 'बूकार...' उनके लेखकों के लिए ऊंची-ऊंची बात लिखवा देते हैं, जिनका मैंने कभी नाम भी नहीं सुना, मुझसे पूछने का मौका तो किसी को नहीं देता हूं, लेकिन बाय-चांस उनके बारे में कहीं बोलना ही पड़ जाए तो हालत करण-थापर के सामने 'दोस्ती बनी रहे' कहने जैसी हो जाती है।

''आप इतना तो जानते ही हैं ना... कि मन से तो मैं एक शब्द भी नहीं बोलता हूं, लेकिन पढ़ने के लिए (टेलिप्राम्प्टर) तो प्रेक्टिस करना होती है ना। इतना बड़ा स्टाफ है... किसी को भी बता सकते हैं कि बड़ा इनाम जिसे मिला है, उसका नाम क्या है, कहां की रहने वाली है और उसकी तारीफ कर दी तो पक्के दोस्त ट्रंप को बुरा तो नहीं लग जाएगा। इतना ध्यान तो आप रख ही सकते हैं।

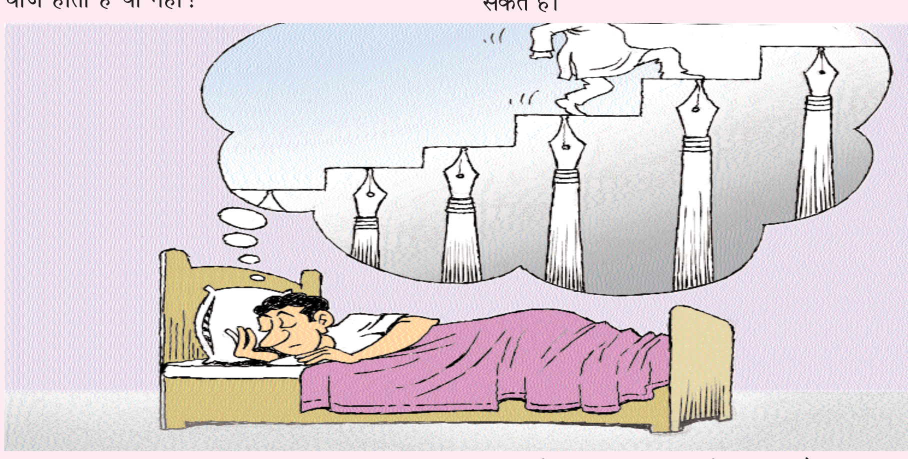

''वैसे तो मोटा भाई के अलावा कोई मेरे सामने या पीछे नहीं बोलता है, लेकिन बुरा लगता है कि मेरे मंत्रियों को पता है और मुझे खबर नहीं। जैसे जहरीला सिरप पीकर बच्चों की मौत हुई... शुक्लाजी आपने ठीक समय पर परिवारों के लिए मेरी तरफ से संवेदना लिख दी थी, लेकिन तब तक मुझे पता ही नहीं था कि ये बच्चे मरे किस प्रदेश या शहर में हैं। यह तो बता ही सकते हैं कि अपनी पार्टी के राज्य में मौत हुई या दूसरों के। अगर गलती से (जैसा कि अक्सर होता रहता है !) किसी विपक्षी राज्य का नाम होता और मैं गुस्से में आ जाता तो क्या संदेश जाता...! ध्यान रखिए आप !

''वैसे ही... वो गायक... असम वाला..., उसका गाना तो क्या मैंने नाम तक नहीं सुना था। पता है अरोड़ाजी आपको, कि संगीत के लिए समय नहीं है मेरे पास, इसलिए किसी को सुन नहीं पाता हूं। वह तो आपने जो शोक-संदेश, मेरे नाम से लिखा था ना, उसे पढ़कर समझ आया कि असम का कोई बड़ा गायक था... लेकिन इतना लोकप्रिय होगा... पता नहीं था ! ऐसे महत्वपूर्ण और संवेदनशील मामलों में पहले से मुझे ब्रीफ किया जाना चाहिए, ताकि कहीं मौका पड़ ही जाए तो कुछ कह सकूं... किसी भी विदेशी राष्ट्रपति के सामने खी-खी कर सिर्फ हंसना ही नहीं पड़े। यह जिम्मेदारी आप लोगों की है !

''इन दिनों धड़ाधड़ पुल गिर रहे हैं... और आप शर्माजी फौरन संवेदना जारी कर देते हैं... अच्छी बात है, लेकिन मुझे यह तो मालूम होना ही चाहिए ना कि इस बार गिरने वाला पुल बिहार का नहीं है, मेरे दिमाग में तो यही रहता है कि पुल गिरा है तो बिहार का ही होगा ! तब बड़ी मुश्किल हो जाती है कि जब पता चलता है बिहार का नहीं गिरा... तो राज्य का नाम याद करना पड़ता है, लेकिन जरूरी है कि पहले मुझे बताया

''पटेल सा'ब... शिकायतें आ रही हैं कि नाटक-संगीत और सिनेमा के चलताऊ नाम पर तो फौरन हमारे मन की बात आ जाती है, लेकिन बड़े-बड़े नाम छूट रहे हैं। लोग शक की निगाह से देखने लगते हैं।

''और आप शाहजी... क्रिकेट में सिर्फ हार-जीत ही नहीं होती है... पुराने खिलाड़ी कभी मरते भी हैं। अभी इंग्लैंड के क्रिकेट अम्पायर मरे तो पाकिस्तान के राष्ट्रपति की श्रद्धांजलि आ गई, लेकिन आप चूक गए। और जगह की तो नहीं कहता... पाकिस्तान से पीछे नहीं रहना है...!

''आप शर्माजी... आपके पास तो सिर्फ ट्रंप की हां में हां मिलाने का ही विभाग है ना ! कई दिनों से कुछ काम नहीं है कि जब से ट्रंप ने सीजफायर का जिम्मा खुद (साठ बार) लिया है, आपके पास तो कोई काम ही नहीं है ! ऐसा करिए... बिहार में चुनाव हैं, देखिए कहीं नालंदा जैसी ब्लंडर फिर ना कर दे कोई ! अब मैं भाषण पढ़ूं या यह देखूं कि कहीं, कोई तथ्यात्मक गलती तो नहीं हुई है ! और मुझे इतना ही पता होता तो आप जैसों की क्या जरूरत थी ! चुनाव का समय है, भारी पड़ सकती है जरा-सी गलती ! फिर मोटा भाई सुनाने लगेंगे चार बातें !

''आज तो वे बुद्धिजीवियों के सम्मेलन में भाषण देने गए हैं तो ज्यादा कुछ होगा नहीं... इसीलिए आप सभी लोगों को आज बुला लिया कि आप भी 'मन की बात' सुन लें, वैसे तो शायद ही कभी सुनते हों। कोशिश करें कि मुझे समय पर पता चल जाए कि प्रतिक्रिया-रिएक्शन किस वजह से लिखी है आपने... नमस्कार।''

(कम्बख्त आधी रात और थकान की नींद में ऐसे झंझावाती सपने क्यों आते हैं... किसी ओझा से पूछूंगा।)

...और क्या कह रही है ज़िंदगी

ममता तिवारी

लेखक साहित्यकार हैं।

प्रणाम बनारस : पुरानी गलियों में नई यादों का सफर

जैसा कि आप में से बहुत लोगों को जानकारी है कि मैं और मेरे हमसफ़र हर बरस 'बनारस' कहिये काशी, वाराणसी कहिये के दर्शन के लिए जाते हैं। हर बार शहर थोड़ा सा तो बदलता है परंतु काशी/बनारस में ज्यादा कुछ नहीं बदलता। पिछली बार कोरिडोर में घूम आये थे और कुछ विदेशी टूरिस्ट की आमद में कमी भी दिखती थी। हमारा प्लान कुछ यूँ हुआ करता था कि पहले सुबह पांच बजे बाबा विश्वनाथ के दर्शन, फिर गंगा में नाव से विहार, फिर 'चाची की कचौड़ी सब्ज़ी', फिर बंगाली मंदिर माँ दुर्गा के दर्शन, उसके बाद संकट मोचन का मंदिर, लाल पेड़े की खरीदी और वापस होटल। शाम को घाट से गंगा आरती। कभी बारिश का प्रकोप ना रहा हो तो बजरे में बैठे सामने से घाट पर होती आरती देखना। थोड़ा बाज़ार घूमना। चाट, रबड़ी खाना। चूंकि घाट तक गाड़ी नहीं जाती सो पैदल घूमना और थके पैरों से होटल वापस।

सुबह उठते ही (होटल का नाश्ता कौन करता है बनारस में) श्री राम भंडार पर नाश्ता (समोसे कचौड़ी जिसमें खास होते हैं)। हाँ, अगर ठंड़ में जाओ तो गलियों में बाल्टी लिये शुद्ध माखन मिश्री का मज़ा लो। हाँ, आप को अगर गलियों से परहेज़ है तो आप जाइये ही मत क्योंकि गलियाँ ही बनारस की शान हैं। उनके बिना बनारस, बनारस नहीं लगता है। सफाई पसंद लोगों के लिये सरकार से निवेदन है कि गलियों को ना छेड़े बस साफ सुथरा करवा दें।

दूसरे दिन सुबह हम नाश्ते के बाद सारनाथ निकल जाते थे। दोपहर तक लौट आते थे। दोपहर में साड़ियों की ढुंढ़ाई मचती, सरदार जी की प्रसिद्ध दुकान से, पापड़ अचार, मिठाई लिया जाता बदस्तूर एक्स्ट्रा बैग लेते सामान बढ़ जाता। लोग पूछते हैं कि आखिर आप लोगों को हर साल बनारस में क्या मिलता है। मैं कहती हूँ बनारस का नयापन और पुराने की खोज। तो इस बार की यात्रा के बारे में बताऊँ क्योंकि हाल ही में कुछ लोगों ने हमारी प्रसन्नता देख बनारस जाने का मन बनाया।

हर साल चूंकि हम फरवरी में जाते थे इस बार हम नहीं जा पाये थे। सो बारिश का अंत चल रहा था और अक्टूबर का प्रथम सप्ताह गंगा हिमाचल की बादल फटने की घटना के कारण उछाह पे थी। पानी मटमैला था, मौसम थोड़ा उमस भरा और बाबा विश्वनाथ में भीड़ कम थी पर विदेशी टूरिस्ट उमड़-उमड़ आ रहे थे। होटल घाट किनारे पायजामा, नारंगी वस्त्र पहने 'हर हर गंगे', 'ओम नमः शिवाय' गा रहे थे। सस्ते कपड़े और रिक्शा की सवारी उनकी होशियारी का परिचय दे रही थी। हम भाग्यशाली थे। गंगा ने हमें बोटिंग करने दी जो उगते सूरज के साथ हमें विभोर कर गई। बाढ़ के कारण घाटों का नुकसान व काफी ऊपर तक रेत चढ़ गई थी।

सड़कें इस बार चौड़ी दिखी सो आवागमन में सुविधा हुई। चाची की दुकान अलग जगह शिफ्ट हुई पर स्वाद बरक़रार था। बहुत सारे वाजिब दामों में नये होटल खुले। कंटोन्मेंट एरिया के शानदार हॉल अपने बड़प्पन से सिर उठाये थे। बाकी दुर्गादेवी, संकट मोचन वैसी ही अवस्था में। वहाँ थोड़ी व्यवस्था सफाई की ज़रूरत है।

अब जो सबसे अच्छा सौभाग्य या मिलाजुला प्रभाव था एक तो घाटों की

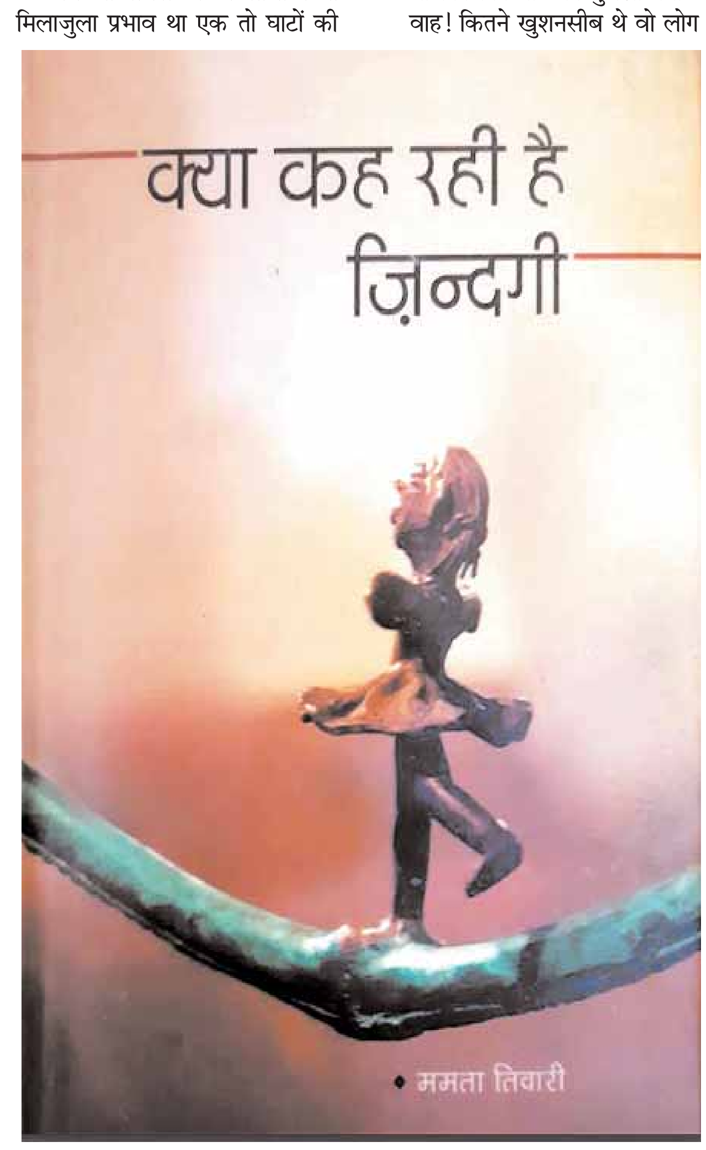

दुर्दशा के कारण आरती दशाश्वमेघ्ध घाट के किसी विशाल मंदिर या घर के ऊपर हो रही थी। नीचे खड़े लोग ठीक से देख नहीं पा रहे थे। सौभाग्य ये था कि हमारे टैक्सी वाले ने हमें क्रूज करवा दिया। प्रति व्यक्ति 1000 रूपये टिकट था। 8-10 क्रूज और एक स्पेशल क्रूज भी था। पहले हमें क्रूज की छत पे बैठा कर पूरे घाट घुमाए और कमेंट्री और वीडियो में घाटों का वर्णन हुआ। क्षमा करें मुझे कहना है इतिहास को ना छेड़ा जाए तो अच्छा। जो पुराना टूटा फूटा है उसे सुधारा जाए। नये घाट बनाने से परंपरा खंडित हुई है। सारे जर्जर पुराने टूटे फूटे घाटों के बीच व्यवस्थित चमचमाता 'नमो घाट' मखमल में पैबंद की तरह लग रहा था। बजाये इसके अगर सामने की तरफ से हर घाट की तरफ एक फोकस लाइट लगाई जाती तो हम हर घाट को ठीक से देख पाते। कुछ घाटों को छोड़ सब घाट अंधेरे में थे। 'मणिकर्णिका घाट' देह की अग्नि से रोशन था।

मणिकर्णिका घाट (फरवरी माह)
मणिकर्णिका घाट पे खड़ी हूँ
दिन बहुत सर्द था
चिता की अग्नि से खुद को गर्मा रही हूँ
नेक इंसान रहा होगा कोई
जाते जाते भी भला कर गया
शवों से उठता धुआँ
मणिकर्णिका घाट को धुंधला गया
वाह! कितने खुशनसीब थे वो लोग
जो गंगा की पावन
धरती पे हुये विलीन
कोई स्वर्ग गया कोई नरक
जाने कितनों का अतीत
इस घाट पे सो गया।

कहते हैं मणिकर्णिका घाट पर शवों का जलना कभी बंद नहीं होता। भक्त मरणासन्न अवस्था में मरने की चाह लिए पहले ही बनारस आ जाते हैं।

खैर, आरती का समय हो चुका था। हमारा क्रूज दशाश्वमेघ घाट के सामने डट गया।

दशाश्वमेघ घाट
सरताज है सब घाटों का
गंगा के साथ साक्षी है सब बातों का
सांझ को घंटियों, शंखों की
मधुर आवाज़
आरती की सुनहरी लौ के
टिमटिमाने के साथ
प्रारंभ होता है एक ज्योति पर्व
हर हर गंगे करता जनसमूह ताल
गंगा भी देती ताल पे ताल
दिवस को महा उत्सव में बदलती
ये मुग्ध करने वाली गंगा आरती

एक अच्छी सुविधा शुरू हुई जब आरती के बाद हम उम्रदराज़ लोग सीढ़ी चढ़ के ऊपर आये पैर जवाब दे गये। अब हममें अपने पैरों पे चलने का दम नहीं था। ढ़ेरों व्हील चेयर लिये मात्र 100 रूपये प्रति व्यक्ति में आपकी गाड़ी, टैक्सी, रिक्शा तक पहुँचाने के लिये बेकरार थे। हमने सुविधा का लाभ उठाया। उनका आभार भी जताया। उसी रास्ते पे छोटी सी चाट की दुकान जिस पर खूब भीड़ थी नाम था 'काशी चाट'। हमने बड़ी दुकानों में ही खाया था पर जो मज़ा 'आलू की टिक्की, पानी पूरी को दोने में खाने में आया उसका जवाब नहीं। सारनाथ जैसा था, वैसा ही था। बस अब दुकानों की भीड़ के कारण शांति भंग थी। नये में हमने स्वर्वेद महामंदिर धाम देखा जो सारनाथ से 15 किमी उमराहा गाजीपुर मार्ग पर बना है। उसकी अद्भुत छंटा, ध्यान का हाल भव्यता और रात्रि में लाइट प्रदर्शन भव्य था। रास्ते में हमारे ड्रायवर ने एक अद्भुत लस्सी पिलाई जो रबड़ी, दही, मलाई, छोटे रसगुल्लों का मिश्रण था।

अब साड़ी खरीदने की बारी थी। हमेशा की तरह हमने एक बड़ी दुकान से खरीदी की पर मन उचोटता रहा कि जब हम 96 में आते थे तब गलियों में से बुनकर से साड़ी लिया करते थे भारीमन से कुछ लिया। अब हमारी मुख्य खोज शुरू हुई। हमेशा परमहंस योगानंद जी के गुरू लाहिणी महाशय का आश्रम ढूंढने की कोशिश की। हमेशा हम उनके घर जाते तो ताला लगे दरवाज़े पे प्रणाम कर लौट आते। हमें पता चला उनके पड़पोते जो लंदन में रहते हैं साल में तीन बार 'सत्य लोक' योगाश्रम आते हैं और क्रिया योग की दीक्षा देते हैं। हम भाव विभोर हो गए। हमने उस छोटी सी साड़ी की दुकान वाले का आभार व्यक्त किया जो गलियों में घुमता आश्रम लाया। हमने लौट के जनवरी में क्रिया योग का निश्चय किया जो पूर्णतः निःशुल्क, भोजन के साथ था। अब छोटी साड़ी की दुकान पे जाकर उसका आभार देना था। आंखें फटी की फटी रह गई बड़ी दुकान की तुलना में वही साड़ी आधे से आधे दाम में मिल गई। व्यवहार इतना अच्छा कि स्क्रीन पर राजकुमार राव अपनी पत्नी के साथ उसी दुकान से साड़ी लेते दिखाई दिए। होटल लौटे तो 'मिर्जापुर' की टीम शूटिंग के लिये आई हुई थी। जैसे स्क्रीन पे दिखते वैसे हक़ीकत में पंकज त्रिपाठी से मुलाकात हुई। बहुत सौम्य सज्जन पुरूष हैं। यूँ हमारी बनारस यात्रा समाप्त हुई एक नये प्रारंभ के लिये। अब कि तो बनारस ने ही हमसे पूछा और क्या कह रही है ज़िंदगी।

अस्त व्यस्त ही रहने दो
इन बनारस की गलियों को
जाओ कभी वहाँ तो
गले मिल किस्से पुराने सुनाती है।

❑ यूके से

प्रज्ञा मिश्रा

चलता रहे कारवां... रंग-ओ-रेखा का !

करीब बत्तीस साल पहले पहली बार यह जाना कि वॉन गॉग कोई चित्रकार था, जिन्होंने परेशानी में खुद का ही कान काट लिया था और पूरी उम्र बीमारी और गरीबी में गुजरी, तब ही जाना था कि मकबूल फिदा हुसैन का इंदौर से क्या रिश्ता है और दुनिया भर के कई कलाकारों की ऐसी कई कहानियां सुनीं, जो बारह-तेरह साल के बच्चे नहीं जानते थे। यूं भी कहा जा सकता है कि मेरा कला-प्राशन्न क्रेडिट **प्रदीप कनिक** और **मंशा कनिक** को जाता है। खास तौर से प्रदीप सर (इंदौर और मुंबई में इसी नाम से पहचाने जाते हैं) ने उस वक्त जो राह पकड़ी, फिर कभी नहीं भटके।

उस दौर में आम से परिवार में इंसान कला की राह पर कम ही चलता था, लेकिन प्रदीप सर ने इंदौर और मुंबई में हर हाल में न सिर्फ कूची और रंगों का हाथ थामे रखा बल्कि अनगिनत लोगों को इस दुनिया में दाखिला दिलाया, हौसला बढ़ाया, नजरिया दिया जिसकी वजह से आज कलाकार हैं।

किसी इंसान को जानते जब लंबा वक्त बीत जाता है तो मुड़कर देखने पर खास पल याद आते हैं, उनके ही सहारे बाद की जिंदगी गुजरेगी। बहुत कुछ याद आ रहा है, याद दिलाया जा रहा है, जैसे उनका अच्छे खाने और खस तौर से मिठाई का शौक, शांत बर्ताव, लेकिन गलत बात बर्दाश्त नहीं और बात के हक में गुस्सा

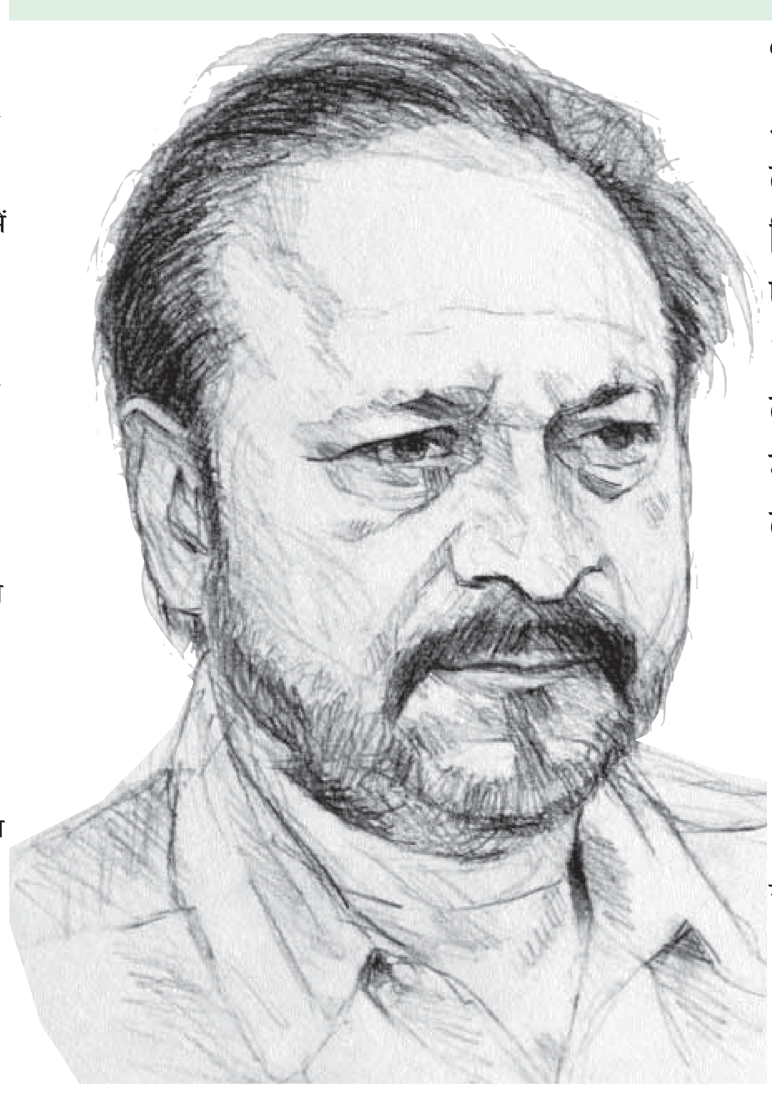

'सैफरन किंगडम' की कहानी उन सारी कहानियों का निचोड़ है, जो अरफात ने अमेरिका, कनाडा में कश्मीरी लोगों से सुनी। कश्मीर की तीन पीढ़ियों के सहारे बात की कोशिश अरफात ने की है। यहां गोलियों की आवाज आती है। कभी-कभार खून दिखाई देता है, लेकिन दहशत परदे पर फिल्म देखने वालों को महसूस होती है। परिवार के अनुभव को कैमरे की नजर से दिखाने की कोशिश है, लेकिन यह किसी भी कश्मीरी परिवार की कहानी हो सकती है, जो अब नहीं बचे, लापता और उन लोगों की कहानी, जिन्हें याद रखना बाकी है। अरफात शेख को फिल्म की शूटिंग जॉर्जिया में करनी पड़ी और इसलिए कलाकार चुनने में दिक्कतें पेश आई। चाहते थे कि सभी कलाकार कश्मीरी हों, लेकिन यह मुमकिन नहीं था।

तक हो जाना, दोस्तों और परिवार में विचारों पर अनगिनत बहस, लेकिन अगले ही पल यूं बात कर लेना जैसे कुछ हुआ ही नहीं। हर एक को उनकी कमी अलग तरह से महसूस हो रही है, लेकिन जिस तरह से कला और रंगों की दुनिया ने महसूसी होगी, उसका अंदाजा भी नामुमकिन है। कैनवास और रंगों की दुनिया में प्रदीप सर के चेहरे ही हैं, जो उनकी याद कभी धुंधली नहीं होने देंगे।

उनको जानने वाले गर्व से भर जाते हैं कि प्रदीप सर ने हुसैन साहब के साथ कैनवास शेयर किया। प्रदीप सर की कई बार जहांगीर आर्ट गैलरी में नुमाइश लगी, लेकिन उन्हें सबसे ज्यादा खुशी आर्ट कैंप और प्रदर्शनी को साकार करने में होती थी। उन्होंने लोगों को जमा किया और आर्ट एंड हार्ट ग्रुप बनाया। इस बैनर तले न सिर्फ नामीगिरामी कलाकार बल्कि नौसिखिए और बच्चों को साथ बुलाया। कैंप गांधी रोटरी, श्मशान घाट, पुरानी कृष्णपुरा छत्रियों और पुराने फाइन आर्ट्स कॉलेज की उस जमीन पर हुए, जहां अब पत्थरों और मलबे में किस्से और कहानियां दबी हैं, जो उस कॉलेज के सुनहरे दिनों का इतिहास सुनाती हैं।

उन्होंने उस दौर में कला को पूरा फोकस दिया, जब कई तरह की मुश्किलें थीं और तनाव थे। तकनीक और कैनवास को जिस तरह से संवारा, उसी शिद्दत से नए कलाकारों की मदद की। आज हमारे बीच नहीं हैं और यह कमी हर पल होगी, लेकिन जिस कला के रास्ते पर चलने वाले कारवां की अगुवाई प्रदीप सर ने की है, उसे चलते रहना चाहिए, उनके लिए यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी !